अध्याय 3

तीमुथियुस के आगमन से उत्साह

थिस्सलुनीके में तीमुथियुस का मिशन (3:1–5)

[1]इसलिये जब हम से और न रहा गया, तो हम ने यह ठहराया कि एथेन्स में अकेले रह जाएँ; [2]और हम ने तीमुथियुस को, जो मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई और परमेश्वर का सेवक है, इसलिये भेजा कि वह तुम्हें स्थिर करे और तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाए, [3]कि कोई इन क्लेशों के कारण डगमगा न जाए। क्योंकि तुम आप जानते हो कि हम इन ही के लिये ठहराए गए हैं। [4]क्योंकि पहले ही, जब हम तुम्हारे यहाँ थे तो तुम से कहा करते थे कि हमें क्लेश उठाने पड़ेंगे, और ऐसा ही हुआ है, जैसा कि तुम जानते भी हो। [5]इस कारण जब मुझ से और न रहा गया, तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिये भेजा, कि कहीं ऐसा न हो कि परीक्षा करनेवाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो, और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो।

आयत 1. इसलिए शब्द पौलुस का थिस्सलुनीकियों को देखने और उनके हाल चाल जानने की तीव्र इच्छा को प्रकट करता है (2:17)। **हमसे और न रहा गया** [στέγω, *स्टेगो*]। "क्रिया στέγω, स्टेगो का अर्थ केवल 'ढांकना' ही नहीं है…बल्कि इस क्रिया का अर्थ 'किसी को सहने के लिए खड़ा होना' भी है।"[1] पौलुस की इच्छा इतनी तीव्र हो गई थी कि जब वह एथेन्स में ठहरे तो उसने तीमुथियुस को उनके पास भेजना **उत्तम समझा** कि उनका खबर ले आए। थिस्सलुनीके के भाई विश्वास में अभी अपरिपक्व हैं जो अपने ही देश वासियों के हाथों दुःख उठा रहे हैं (2:14), और पौलुस को लगा कि यदि कोई उत्साहित करने के लिए उनके पास न गया तो कहीं वे दबाव में आकर हियाव न छोड़ दें।

यह तथ्य पौलुस के यात्रा की इतिहास का एक और विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करता है जो प्रेरितों के काम के पुस्तक में नहीं पाया जाता है। स्पष्ट रूप से जब सीलास और तीमुथियुस ने एथेन्स में उसका पीछा किया (प्रेरित 17:14, 15), तो वे उसके साथ कुछ समय के लिए ठहरे थे। तब, पौलुस ने तीमुथियुस को वापस थिस्सलुनीके भेजा था (आयत 2)। इससे हम यह अनुमान लगा सकते

हैं सीलास को भी थिस्सलुनीके के आस पास के क्षेत्र (संभवतः बिरिया) भेज दिया गया होगा क्योंकि पौलुस **एथेन्स** में **अकेले ही रह** [καταλείπω, *काटालैपो*, "पीछे छोड़ देना" या "त्याग देना"][2] गया था। प्रेरित, अन्य जातियों के क्षेत्र में था जहाँ मसीह के बारे में कुछ भी सुनने को नहीं मिलता था। इसलिए, विशेषकर ऐसी परिस्थिति में वह किसी की सहायता चाहता था, लेकिन वह उनके सुख समृद्धि के लिए कीमत चुकाने के लिए भी तैयार था। एथेन्स में अपने नकारात्मक अनुभव के साथ वह कुरिन्थ चला गया जहाँ सीलास और तीमुथियुस, जो मकिदुनिया (जहाँ थिस्सलुनीके और बिरिया स्थित है) से वापस लौटे थे, उनसे जा मिले (प्रेरित 18:1–5)।

आयत 2. तीमुथियुस का विवरण पौलुस के **भाई** के संदर्भ में किया गया है जिसमें एक पारिवारिक परिवेश दिखाई देता है और यह किसी के उच्च या नीच होने को नहीं दर्शाता है। वह **परमेश्वर का सेवक** के रूप में वर्णित किया गया है। यह बहुत ही उच्च प्रशंसासूचक विवरण है जो यह प्रकट करता है कि तीमुथियुस ने पौलुस या किसी अन्य व्यक्ति की सेवा नहीं की बल्कि वह परमेश्वर के कार्य में परमेश्वर का सहकर्मी था। इस आयत में "सहकर्मी" यूनानी शब्द συνεργός (*सुनेरगोस*) का हिंदी रूपांतरण है। जबकि, कुछ प्रतिलिपि में यह διάκονος (*डियाकोनोस*)[3] उद्धृत किया है। डियाकोनोस को रोमियों 16:1 में "कलीसिया की सेविका" अनुवाद किया गया है और 1 तीमुथियुस 3:8 में भी यही शब्द पाया जाता है। फिर भी, जहाँ कहीं इस शब्द को किसी आयतवी का दर्जा नहीं दिया गया है वहाँ इसका अर्थ सेवक या दास है। **मसीह के सुसमाचार में** तीमुथियुस एक "सेवक" है। सुसमाचार प्रचारकों का कार्य सुसमाचार कि मसीह पापियों को खरीदने के लिए मरा है, में पाया जाता है। पौलुस ने तीमुथियुस की अति प्रशंसा की है ताकि वह उनको यह बता सके कि उसने तीमुथियुस को अपनी जगह भेजकर उनको किसी भी बात में कम नहीं आँका है।

थिस्सलुनीकियों को उत्साहित या **स्थिर** करने के लिए ही तीमुथियुस को वहाँ भेज दिया गया था। "स्थिर करने" के लिए यूनानी शब्द στηρίζω (*स्टेरिज़ो*), प्रयोग किया गया है जिसका "अर्थ 'ठीक करना,' 'उत्साहित करना' है और यही नए विश्वासियों की आवश्यकता है – यह उस प्रकार का कार्य है जो उन्हें विश्वास में स्थिर करता है।"[4] तीमुथियुस को उन्हें उनके **विश्वास** के विषय में **समझाने** के लिए भी भेजा गया था (तुलना करें 1:8; 3:5–7; 5:8), कि उनका उत्साह बढ़ाएं या फिर वे हियाव बांधे।

आयत 3. तीमुथियुस को उन्हें उत्साहित करने के लिए भेजा गया था ताकि यह निश्चित किया जाए कि वे इन **सताने** वालों के कारण **निराश** न हों या फिर वे परमेश्वर के समीप से दूर न हट जाएं, जैसे RSV कहता है कि उनकी एक

ऐसी स्थिति हो जाए जो परमेश्वर से दूर हो। "ये सताने वाले" या परेशानी उन्हीं के स्वदेशी भाई हैं जिसका विवरण 2:14 में पाया जाता है। पौलुस ने कहा कि वे जानते थे कि सताव/परीक्षा आएगा क्योंकि उसने अगले आयत में लिखा है कि वे इस बात की अपेक्षा करें। इस प्रकार का परीक्षा हमेशा शारीरिक नहीं होता है लेकिन वे कभी-कभी वे हमारे अपने निकट मित्रों के द्वारा भी आता है। इस प्रकार का विचार धारा 2 तीमुथियुस 3:12 में भी पाया जाता है (तुलना करें यूहन्ना 15:19; मत्ती 10:34)।

आयत 4. कहा करते थे, यूनानी शब्द προελέγομεν (*प्रोएलेगोमेन*), का अनुवाद है जो προλέγω (*प्रोलेगो*) का अपूर्ण भूतकाल है। अपूर्ण क्रिया किसी कार्य को बार-बार दोहराने की ओर इशारा करता है जिसका उचित अर्थ कहा करते थे, ही है। उसने उन्हें सताव के बारे में बार-बार चेतावनी दी थी। फिर भी, यदि किसी व्यक्ति ने इसका अनुभव नहीं किया है तो वह उसको "चौंका देगा" और उसे बार बार चेताने के बाद भी निरुत्साह हो जाएगा। इसी बात का पौलुस को भय था।

आयत 5. जब उसकी चिंता बढ़ती गई और **रहा न गया** तो उसने तीमुथियुस को उनका हाल जानने के लिए भेजा। उसे डर लग रहा था कि कहीं **परीक्षा करने वाले** (शैतान, मत्ती 4:3–5) ने उन्हें धोखा तो नहीं दिया और उन्हें गिरा तो नहीं दिया जिससे कि पौलुस की सारी **मेहनत पर** पानी फिर जाए कि थिस्सलुनीकियों की आत्मा नष्ट हो जाए। (केनोस κενός [*केनोस*], "व्यर्थ" संबंधित चर्चा 2:1 में देखें।)

पौलुस ने प्रथम पुरूष व्यक्तिगत सर्वनाम "मैं" प्रयोग किया है जो यह दिखाता है कि वह व्यक्तिगत रूप से उनकी चिंता करता था और सभी प्रकार के विरोध के बावजूद तीमुथियुस को उनके पास भेजने का उसका अपना विचार था। उसने उन्हें नहीं त्यागा था।

तीमुथियुस के संदेश के कारण आनंद (3:6–10)

[6]पर अभी तीमुथियुस ने, जो तुम्हारे पास से हमारे यहाँ आया है, तुम्हारे विश्वास और प्रेम का सुसमाचार सुनाया और इस बात को भी सुनाया कि तुम सदा प्रेम के साथ हमें स्मरण करते हो, और हमारे देखने की लालसा रखते हो, जैसा हम भी तुम्हें देखने की। [7]इसलिये हे भाइयो, हम ने अपने सारे दुःख और क्लेश में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति पाई। [8]क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं। [9]और जैसा आनन्द हमें तुम्हारे कारण अपने परमेश्वर के सामने है, उसके बदले तुम्हारे विषय में हम किस रीति से परमेश्वर का धन्यवाद करें? [10]हम रात दिन बहुत ही प्रार्थना करते रहते हैं कि

तुम्हारा मुँह देखें और तुम्हारे विश्वास की घटी पूरी करें।

आयत 6. जब पौलुस ने यह पत्री लिखी तो उस समय तीमुथियुस, थिस्सलुनीके की यात्रा पूरी करके कुरिन्थुस पहुँचा था, जहाँ पौलुस एथेन्स से तीमुथियुस के थिस्सलुनीके जाने के बाद चला गया था (प्रेरित 18:5)। पौलुस ने कहा कि तीमुथियुस ने थिस्सलुनीकियों के बारे में उसे **सुसमाचार सुनाया**। "सुसमाचार सुनाया" यूनानी शब्द εὐαγγελίζω (*युवांगलिज़ो*), से उद्धृत है जिसका अर्थ "सुसमाचार सुनाना या घोषणा" करना है। यह संदर्भ एक एक करके "सुसमाचार सुनाने" का स्पष्ट उदाहरण है (तुलना करें प्रेरित 8:4)।

यह उनके **विश्वास और प्रेम** या का "सुसमाचार" था। उनका विश्वास, परमेश्वर पर उनके भरोसे को प्रकट करता है जो उन्हें "कार्य" करने के लिए उत्साहित करता है और उनका "प्रेम" परिश्रम करने के लिए उन्हें विवश करता है (1:3)। वस्तुतः, सच्चा प्रेम किसी न किसी प्रकार का कार्य प्रकट करता है (तुलना करें 1 यूहन्ना 4:10)। इसके साथ ही जो सुसमाचार तीमुथियुस लाया वह यह था कि थिस्सलुनीकी अभी भी पौलुस को **प्रेम के साथ** स्मरण करते हैं। इसका प्रमाण यह है कि पौलुस के विरोधी थिस्सलुनीकियों को इस बात के लिए नहीं मना सके कि पौलुस एक झूठा शिक्षक है और वह उन्हें धोखा देने का प्रयास कर रहा है (2:3; NIV)। वे अभी भी उसे देखना **चाहते थे जैसे उसने** भी उन्हें देखने की इच्छा प्रकट की थी (2:17)। पौलुस संभवतः इस बात से परेशान नहीं था कि उन्हें उसके बारे में कैसा लगता है। वह यह सोच रहा था कि यदि थिस्सलुनीकियों ने उसके विरोधियों की बातों को माना तो इस बात की सबसे अधिक संभावना यह है कि वे आचरण या शिक्षा, या दोनों से भटक जाएंगे जो उनके विनाश का कारण ठहरेगा।

आयत 7. जब पौलुस ने तीमुथियुस के लौटने की प्रतीक्षा, पहले एथेन्स में और बाद में कुरिन्थुस में की, तो वह **दुःख और क्लेश** सह रहा था। एथेन्स में वह निस्संदेह मूर्तियों के कारण व्यथित था जो शहर में भरी पड़ी थी (प्रेरित 17:16–18)। कुरिन्थुस में जो हठीले यहूदी रहते थे उन्होंने निश्चय ही उसको दुःख पहुँचाया था (प्रेरित 18:5, 6)। तीमुथियुस से संदेश मिलने के बाद, थिस्सलुनीकियों के **विश्वास** के कारण – कि वे सताव के बावजूद, लगातार परमेश्वर और उसके मार्गों पर भरोसा रखते हैं, पौलुस को **शांति** मिली।

"शांति मिली" और "उत्साहित करना" दोनों एक ही यूनानी शब्द παρακαλέω (*पाराकालेओ*) का अर्थ है जिसका विस्तृत अर्थ "प्रोत्साहन के द्वारा सहायता करना" है और जिसका प्रयोग दूसरी आयत में भी किया गया है।[6] जॉर्ज ब्रौमैन के अनुसार नए नियम में 109 बार *पाराकालेओ* शब्द का प्रयोग हुआ है और इसका अर्थ: (a) बुलाना, निमंत्रण देना, पूछना, याचना

करना; (b) प्रोत्साहित करना; (c) ढाढ़स बंधाना, उत्साहित करना इत्यादि है। संज्ञा रूप [παράκλησις] *पाराक्लेसिस*, का अर्थ प्रोत्साहन, उत्साह, निवेदन, याचना, शांति या ढाढ़स, धैर्य है।[7] अक्षरशः, यूनानी लेख का यह अर्थ है कि उसको "तुम्हारे बारे में" नहीं अपितु "तुम पर" (ἐφ᾽ ὑμῖν, *एप ह्यूमिन*) शांति मिली। "इस प्रकार के संबंध में, 'तुम पर' एक असामान्य पूर्वसर्ग है और इसकी महत्ता यह है कि पौलुस का नया जोश थिस्सलुनीकियों पर आधारित था…और यह संबंध जो छाप यहाँ छोड़ता है वह यह है कि उस जोश ने पौलुस को, जिस समस्या में वह फंसा था, से ऊपर उठने में सहायता की।"[8]

आयत 8. प्रभु में स्थिर रहो στήκω (*स्टेको*) का अर्थ यह है कि अपने आपको "व्यथित" न होने देना है (3:3)। सकारात्मक रूप से इसका अर्थ "सहनशीलता" दिखाना है (1:3; NIV), जिसका निर्धारण "कार्य" और "परिश्रम" से किया जाता है (1:2, 3)। इसका तात्पर्य यह हुआ कि "प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाना है" (1 कुरिन्थियों 15:58) न कि इसके विपरीत संदेह या दुविधा जताना है।, *स्टेको*, "कालांतर में पूर्णकाल क्रिया रूप [ἵστημι] *हिस्टेमी*, से विकसित हुआ है, जिसमें 'स्थिर रहने' का विचार पाया जाता है…।"[9]

पौलुस का आनंद यह था कि जब उसने सुना कि वे अपने आपको संवार रहे हैं तो इस संदेश ने उसको रेंग रेंगकर जीने के बजाय भरपूरी **से जीने** के लिए प्रेरित किया कि वह अपने आप में आनंद मनाए। यह पौलुस के आत्मिकता के बारे में बहुत कुछ बताता है। उसको सच्चा आनंद तब मिलता है जब वह लोगों को आत्मिक रूप से बढ़ते हुए देखता है, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि वे अपना मन "स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में लगाते हैं" (कुलुस्सियों 3:1–4)। क्या हम पौलुस के जैसे हैं? क्या हम भाइयों को विश्वासयोग्य और आत्मिक रूप से बढ़ते हुए देखते हैं तो आनंदित होते हैं? हम सबसे अधिक कब उत्साहित हुए? जब कलीसिया उन्नति कर रही थी या फिर हमारा चहेता दल जीत रहा था?

आयत 9. हमने पहले यह देखा कि पौलुस ने लगातार और नित्य प्रार्थना की और इन प्रार्थनाओं में थिस्सलुनीकियों के लिए विशेष धन्यवाद भी शामिल था (1:2, 3 का विश्लेषण देखें)। यहाँ हमें यह मिलता है कि परमेश्वर ने थिस्सलुनीकियों को आत्मिक रूप से सुदृढ़ किया, जिस कारण उसको अति आनंद प्राप्त हुआ, इसलिए इसके बदले उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया। फिर भी वह कहता है कि उसको जितना **आनंद** मिला उतना उसने **परमेश्वर का धन्यवाद** नहीं किया। यूनानी में अक्षरशः "इसको ऐसा पढ़ा जा सकता है, 'हम परमेश्वर को इसके बदले किस प्रकार का धन्यवाद दे सकते हैं?' जहाँ क्रिया [ἀνταποδίδωμι], *अंतापोदिदोमी*, एओरिस्ट इनफिनिटी काल (cf. 2 थिस्सलुनीकियों 1:6) में है, जिसका सारांश, 'यथोचित वापस करना' है।"[10]

हालांकि, थिस्सलुनीकियों के हृदय भी गदगद हो उठा था जब उन्होंने यह

पढ़ा कि पौलुस ने परमेश्वर को सारा धन्यवाद उन्हीं के कारण दिया था (देखें आयत 6-10, जहाँ पूरा जोर "तुम" और "तुम्हारे" पर दिया गया है)। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि यह आनंद हमारे परमेश्वर के सम्मुख था या "फिर हमारे परमेश्वर के उपस्थिति" में था। स्पष्ट रूप से, पौलुस का यह तात्पर्य था कि जो आनंद उसको और उसके सहकर्मियों को मिला वह स्वार्थ से भरा नहीं था। बल्कि यह ऐसा था जिसके लिए वे **परमेश्वर के सम्मुख** सब कुछ रखने के लिए तैयार थे और वही उनको परखे क्योंकि उनकी इच्छा अपनी महिमा करने की नहीं बल्कि थिस्सलुनीके में रहने वाले लोगों के उद्धार की थी।

आयत 10. कि पौलुस और उसके सहकर्मियों ने रात **और दिन प्रार्थना** की, उनके प्रार्थना के अवधारणा के बारे में बहुत कुछ बताता है। बेशक वे इसके प्रभाव पर विश्वास करते थे (तुलना करें याकूब 5:16)। उन्होंने प्रार्थना की कि पौलुस **उनका चेहरा** देखे या फिर वह स्वयं उन्हें देख आए। सत्य यह है कि जब उसने तीमुथियुस को उनके पास भेजा था तो वह पूर्णतया संतुष्ट नहीं था। वह स्वयं उनसे मिलना चाहता था ताकि वह उनकी **घटी** (यदि कोई हो तो) को **पूरी करें**। उनके सीखने में कुछ कमी रह गई थी। "पूरी करे" यूनानी शब्द καταρτίζω (*काटारिद्जो*), से अवतरित है जिसका अर्थ जालों (मत्ती 4:21) या मनुष्यों (गलातियों 6:1) को "सुधारना" है। ए. टी. रॉबर्टसन के *काटारिद्जो* का विश्लेषण देखें।[11]

थिस्सलुनीकियों के बारे में तीमुथियुस का सूचना कुल मिलाकर ठीक था, लेकिन उनको और अधिक शिक्षा और परिपक्व होने की आवश्यकता थी ताकि वे "और अधिक बढ़ते जाएं" (4:1, 10)। पौलुस का उनको और अधिक शिक्षा देने का उद्देश्य यह था कि वे अपने **विश्वास** की कमी पर जय प्राप्त कर सके। इस संदर्भ में, "विश्वास" संभवतः शिक्षा की उस धारणा को प्रकट करता है जिसको थिस्सलुनीकियों ने ग्रहण किया था और इसमें जो कमी थी वह प्रभु यीशु के द्वितीय आगमन के संबंध में था। इसी संदर्भ में "विश्वास" शब्द का प्रयोग यहूदा 3 में पाया जाता है।

पौलुस और उसके सहकर्मियों की शुभकामनाएं और प्रार्थना (3:11–13)

[11]अब हमारा परमेश्वर और पिता आप ही और हमारा प्रभु यीशु, तुम्हारे यहाँ आने में हमारी अगुआई करें। [12]और प्रभु ऐसा करे कि जैसा हम तुम से प्रेम रखते हैं, वैसा ही तुम्हारा प्रेम भी आपस में और सब मनुष्यों के साथ बढ़े, और उन्नति करता जाए, [13]ताकि वह तुम्हारे मनों को ऐसा स्थिर करे कि जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ आए, तो वे हमारे परमेश्वर और

पिता के सामने पवित्रता में निर्दोष ठहरें।

आयत 11. पौलुस जानता था कि यदि उसको थिस्सलुनीके लौटना है तो यह केवल उसके **परमेश्वर और पिता** और उसके प्रिय स्वामी **हमारा प्रभु यीशु** द्वारा हस्तक्षेप और उसके मार्ग की **अगुआई** के द्वारा ही हो सकता है। यह सत्य कि ये दोनों एक हैं जो पौलुस के वापस लौटने के लिए मार्ग खोलेंगे यह दिखाता है कि पौलुस ने यीशु को ईश्वरीय स्वीकारा और यह स्वीकार किया कि उसके वापस लौटने में पड़ने वाले बाधाओं को वे हटाएंगे। "अगुआई करेगा" यूनानी क्रिया κατευθύνω (*काटेयूथुनो*), एक "पुरानी क्रिया" यूनानीक्रिया है जिसका तात्पर्य "एक सीधी मार्ग तैयार करना" है।[12] "हमारे परमेश्वर और पिता" का यह तात्पर्य है कि उसने परमेश्वर के लेपालक पुत्र होने का आनंद उठाया।

क्या पौलुस का थिस्सलुनीके लौटने की प्रार्थना सुनी गई? ऐसा लगता है कि सुनी गई थी। लगभग तीन या चार वर्ष बाद वह मकिदुनिया के क्षेत्र, जहाँ थिस्सलुनीके स्थित है, गया और वहाँ उसने उस जिले के लोगों को बहुत प्रोत्साहित किया (प्रेरित 20:1, 2)। संभावना यह है कि इस दौरान उसने थिस्सलुनीके भ्रमण भी किया होगा। इसके साथ ही, वह फिर से वहाँ गया होगा (1 तीमुथियुस 1:3)।

आयत 12. पौलुस का उनके प्रति प्रेम (*अगापे*, के बारे में 1:3 का विश्लेषण देखें) जितनी बार उनके संपर्क में आया, बढ़ता गया। वे भी उसी प्रकार के **प्रेम** के बारे में वर्णित किए गए हैं परंतु पौलुस ने यह इच्छा प्रकट की कि उनका प्रेम उस स्तर से **बढ़े** जब उसने उन्हें पत्री लिखकर संबोधित किया था ताकि वह और **उन्नति करता जाए** यहाँ तक कि वह उमड़ने लगे। उसने यह प्रार्थना कि उनका प्रेम एक दूसरे के लिए अर्थात वहाँ रहने वाले विश्वासियों के लिए बढ़ता चला जाए। जो मसीही परिपक्व हैं वे एक दूसरे को प्रेम करेंगे और तब वे **सब मनुष्यों** से भी प्रेम करेंगे (देखें 1 यूहन्ना 4:7; गलातियों 6:10)। शब्दांश "उन्नति करे," "बढ़ने" को तीव्रता प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में, इन दोनों शब्दों का प्रयोग जोर देने के लिए किया गया है तो ऐसी स्थिति में वे पर्यायवाची ठहरते हैं, जैसे कि डेविड जे. विलियम्स का मत है।[13]

परमेश्वर का वास्तविक परिपक्व संतान, सबसे विद्रोही मनुष्य के साथ भी भेदभाव नहीं करेगा क्योंकि सभी मनुष्य मसीहियों के स्वर्गीय पिता के संतान हैं। परमेश्वर सभी मनुष्यों से प्रेम करता है और हमें परमेश्वर को अपने लिए प्रेम का आदर्श मानना है (देखें यूहन्ना 3:16; मत्ती 5:48)। क्या हम, वास्तव में, सभी लोगों से प्रेम करते हैं? क्या हम ईमानदारी से कह सकते हैं कि हम सभी लोगों से प्रेम करते हैं और क्या हम इसका प्रमाण अपने जीवन से प्रकट कर सकते हैं? क्या हम दूसरों के साथ परमेश्वर का संदेश बांटने में सहायता

कर रहे हैं? ऐसा करने से हम उनको, जिनको हम शिक्षा देते हैं, बेहतर जीवन जीने में सहायता कर सकते हैं और उनका हमेशा के लिए उद्धार हो सकता है। निश्चय उनको सुसमाचार देना, उनको प्रेम दिखाने का सबसे अच्छा माध्यम है।

आयत 13. सभी लोगों या समूह का अंतिम उद्धार, हमारे **प्रभु यीशु के आने** अर्थात **उसके** द्वितीय आगमन पर ही होगा (तुलना करें 4:15)। वह सभी लोगों का न्याय करने को आएगा (यूहन्ना 5:22–30)।

यहाँ पर "आगमन" के लिए παρουσία (*परूसिया*) शब्द का प्रयोग किया गया है। यह शब्द 2:19 में भी प्रयोग किया गया है, लेकिन इसके लिए यही अच्छा होगा कि हम इसकी चर्चा इसके उचित स्थान पर हुए प्रयोग पर ही की जाए। लियोन मौरिस ने 2:19 पर निम्न टिप्पणी की:

> मसीही साहित्य में इस महत्वपूर्ण शब्द का यह प्रथम प्रयोग है। इसका प्राथमिक अर्थ "उपस्थिति" है (जैसे 1 कुरिन्थियों 16:17, 2 कुरिन्थियों 10:10 में पाया जाता है)। यह "सामने आकर उपस्थित होना," "पहुँचना" की भाव पैदा करता है (2 कुरिन्थियों 7:6 f.)। साधारण भाषा में यह किसी बड़े व्यक्ति, जैसे राजा के आने की भाव प्रस्तुत करता है और यह राजकीय भ्रमण के लिए प्रयोग की जाने वाली शब्द है। नए नियम में तकनीकी रूप से राजकीय भ्रमण के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाने लगा जिसे हम हमारे प्रभु के द्वितीय आगमन के संबंध में प्रयोग करते हैं। नए नियम से यह मसीही साहित्य में प्रयोग किए जाने लगा … इसलिए पौलुस यहाँ इस शब्द का प्रयोग … प्रभु के द्वितीय आगमन के चरितार्थ प्रयोग करता है। और इसके बाद पौलुस यह कहता है कि थिस्सलुनीके उसकी आशा और आनंद और उसके घमण्ड का मुकुट हैं। राजकीय *परूसिया*, के अवसर पर लोगों ने अपने आपको बिना मुकुट का पाया तौभी इसका अधिक औचित्य नहीं हैं। क्योंकि इस राजा के आगमन पर उसके लोग उसके मुकुट होंगे।[14]

पौलुस ने संयोगवश यह भी इंगित किया है कि यीशु अपने **सब पवित्र लोगों** के साथ लौटेगा। ये संत कौन हैं? यूनानी में ये ἅγιοι (*हागीओई*), अक्षरशः "पवित्र लोग" हैं। क्या ये आज्ञाकारी लोग हैं जो अंतिम न्याय से पहले जा चुके हैं और जिनकी आत्माएं उसके आगमन पर उसके साथ होंगी? या क्या ये स्वर्गदूत हैं जो प्रभु के साथ आएंगे? विभिन्न संदर्भों में यूनानी शब्द का दोनों अर्थों में प्रयोग किया गयाहै। यहाँ NASB, KJV, और RSV इस शब्द का प्रयोग "संत" करते हैं जो यह बताता है कि अनुवादकों ने "आज्ञाकारी लोगों" के सिद्दांत के रूप में इसे अनुवाद किया है जबकि NIV ने इसका अनुवाद "holy

ones," "पवित्र" किया है जिसको "पवित्र लोग" या "स्वर्गदूत" के रूप में समझा जा सकता है। क्योंकि दूसरे संदर्भों में उसके आगमन पर यूनानी शब्द ἄγγελοι (*आंगेलोई*) से यह स्पष्ट है कि उसके "साथ" स्वर्गदूत आएंगे (मत्ती 25:31; मरकुस 8:38; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7), और क्योंकि ये स्वर्गदूत "पवित्र" करके वर्णित किए गए हैं (मरकुस 8:38; लूका 9:26), तो इससे यह प्रतीत होता है कि यहाँ ये "पवित्र" स्वर्गदूत ही होंगे। इस संभावना पर इस बात से जोर दिया जा सकता है कि ऐसा लगता है पौलुस उन मसीहियों से जो धरती पर हैं का विभेद उनसे जो यीशु के साथ लौट रहे हैं, से कर रहा है।

इस विभेद को निश्चित अनुवाद के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए, लेकिन अधिक संभावना यह है कि वे स्वर्गदूत ही होंगे। मौरिस ने स्वर्गदूत और संत दोनों को इस श्रेणी में सम्मिलित किया है[15] और जे. ड्ब्ल्यू. मेक्गावरी और फिलिप वाई. पेंडलटन ने संतों के पक्ष में इसका अनुवाद किया है।[16] आई. हॉवर्ड मार्शाल ने यहाँ "संतों" को शामिल करने में "असहजता" जताई है। उनके अनुसार, "विश्वासियों का प्रभु से मिलन उसके आने के बाद होगा न कि उसके आने से पहले।"[17] *हागीओई* का यहाँ पर कुछ भी तात्पर्य क्यों न हो, यीशु के साथ सभी श्रेणी के लोग आएंगे, जब कि उस समय यहाँ पृथ्वी पर कुछ संत जीवित पाए जाएंगे। (नीचे तालिका देखें, "रैप्चर, मिलेनियम, इत्यादि पर लिन्दसे के विचार।")

रैप्चर, मिलेनियम, इत्यादि पर लिन्दसे के विचार[18]

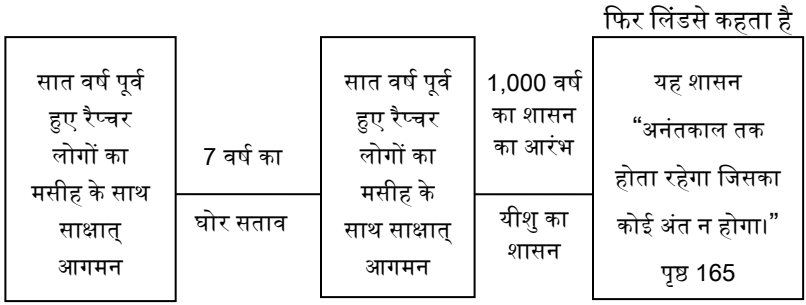

जिस प्रकार "रैप्चर की शिक्षा देनेवाले" इस आयत का प्रयोग करते हैं उसका विलियम ने इस प्रकार विश्लेषण किया है:

> अंतिम दिनों के परिवेश में, आज बहुत से मसीही यीशु के दोहरे

पुनरागमन की धारणा पर विश्वास करते हैं: प्रथम, कलीसिया को उठाने के लिए गुप्त रूप में आना और दूसरा साक्षात् रूप में प्रकट होना, जो महा क्लेश (इस सिद्धांत के अनुसार केवल संसार क्लेश उठाएगा) के पश्चात् संसार का न्याय करने को आएगा। प्रथम आगमन रैप्चर कहा जाता है और दूसरा प्रकाशन। रैप्चर शब्द यूनानी शब्द ἁρπάζω (*हारपाज़ो*), जिसका लैटिन समानान्तर शब्द (*रापेरे*) है, से आया है, जिसे पौलुस ने 4:17 में इस प्रकार प्रयोग किया है, "तब हम … उठा लिये जाएंगे।" फिर भी, पौलुस इसका प्रयोग आधुनिक सिद्धांत के संदर्भ में नहीं करता है … यह सिद्धांत इस आयत के सारांश से लिया गया है। यदि यीशु को अपने संतों के साथ आना है, जैसे इस आयत में लिखा है वह आएगा, तो यहाँ तर्क किया जाता है कि फिर उसे उनके लिए पहले आना होगा। इस परिवेश के साथ कई अन्य और अनुच्छेद भी इसकी पुष्टि करते हैं (मरकुस 13:27; प्रकाशितवाक्य 11:11), लेकिन उनमें से कोई भी, कम से कम 1थिस्सलुनीकियों 3:13, के अनुवाद से अधिक मान्य नहीं है।[19]

यीशु चाहे अपने साथ स्वर्गदूतों या संतों को ले आए, पौलुस यह प्रार्थना कर रहा है कि परमेश्वर थिस्सलुनीकियों के **मनों** को **दृढ़ करे** (सामर्थ्य प्रदान करे) ताकि आने वाले न्याय के समय ये मसीही **हमारे परमेश्वर के सम्मुख** (उसके न्याय के कठघरे में) **निर्दोष** (जिन पर कोई दोष न लगा सके) और **पवित्र** [यीशु के लहू के द्वारा शुद्ध किए गए, 1 यूहन्ना 1:7–10] खड़े हो सके। परमेश्वर, पौलुस और उसके सहयोगियों को इन थिस्सलुनीकियों को उस अंतिम परीक्षा के लिए तैयार करने में उपयोग कर रहा था। उसने दिल से चाहा कि उसके आगमन पर वे "निर्दोष" पाए जाएं।[20]

अनुप्रयोग

परिपक्व प्रचारक की प्रार्थना

अध्याय 3 में पौलुस ने थिस्सलुनीकियों में बिताए कुछ महीनों का उल्लेख किया है जब उसने थिस्सलुनीकियों की कलीसिया की नींव डाली थी (देखें प्रेरित 17:1–9)। पौलुस एक परिपक्व प्रचारक था और थिस्सलुनीकियों की कलीसिया विश्वास में अभी अपरिपक्व थी। थिस्सलुनीकियों में सुसमाचार के विरोध के कारण उसे उस शहर को अपरिपक्व अवस्था में छोड़ना पड़ा था और यही उसकी चिंता का विषय था। यहाँ हमें एक परिपक्व प्रचारक की उसके अपरिपक्व विश्वासियों के बारे में स्पष्ट चिंता दिखाई देती है। संभवतः पौलुस की थिस्सलुनीकियों के लिए प्रार्थना इस गुमनाम प्रचारक की प्रार्थना जैसी ही होगी:

हे परमेश्वर, मेरे हाथों में, तूने सभी वस्तुओं में विरल, मनुष्य का मस्तिष्क या हृदय थमाया है।

तूने अपना स्वरूप जो मनुष्य के आत्मा में छापा है, मुझे दे दिया है।

तूने इस ईश्वरीय वरदान को तराशने और परिपक्व (सुसमाचार के द्वारा) बनाने की सामर्थ्य मुझे प्रदान की है।

इस ईश्वरीय सृष्टि में तेरा सुसमाचार प्रचार करना एक अद्वितीय कार्य है।

तेरे अथाह वरदान के प्रति सजग रहने के लिए मुझे अनुग्रह प्रदान कर कि मैं इसको सम्मानपूर्वक स्पर्श कर सकूँ।

मेरी आत्मा का उथलापन जब मैं उस कार्य पर जो तूने मुझे दिया है, दृष्टि करता हूँ तो गहरा होता जाए।

जो मुझे जानते हैं, वे तुझे जाने और तेरे ईश्वरीय प्रेम के द्वारा धन्य किए जाएं।

हे परमेश्वर, मुझे इस महान कार्य के योग्य बना। EE

भाइयों को स्थिर एवं उत्साहित करना (3:2)

आयत 2 में पौलुस ने लिखा, "और हम ने तीमुथियुस को, जो मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई और परमेश्वर का सेवक है, इसलिये भेजा कि वह तुम्हें स्थिर करे और तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाए।" पौलुस की यह तीव्र इच्छा थी कि वह थिस्सलुनीकियों की कलीसिया पर आए सताव को सह ले।

पौलुस को डर था कि कहीं थिस्सलुनीकियों के लोग सताव के कारण गिर न जाएं (आयत 5)। इसलिए, चुपचाप उनके विषय में चिंता करने के बजाय, उनकी सहायता करने के लिए उसने कुछ किया। वह शहर में इसलिए नहीं लौट सकता था क्योंकि उसके जीवन को खतरा था; इसलिए उसने तीमुथियुस को भाइयों के पास भेजा। थिस्सलुनीकियों के विश्वासी तीमुथियुस को जानते तो थे परंतु वहाँ के यहूदी उसे नहीं जानते थे। वह एक विश्वासयोग्य सेवक, एक "भाई" और "मसीह के सुसमाचार में परमेश्वर का सहकर्मी" था (आयत 2)। तीमुथियुस मसीह का सुसमाचार लोगों को सुनाएगा कि वह किस तरह लोगों के उद्धार करने के लिए मरा। तीमुथियुस, पौलुस की दुविधा का व्यवहारिक समाधान है।

उसने तीमुथियुस को उन्हें "स्थिर और उत्साहित" करने के लिए भेजा। वह अपने उद्देश्य की पूर्ति कैसे कर सकता था? इस संबंध में बाइबल हमें स्पष्ट रूप से उत्तर नहीं देती है, लेकिन हम ऐसा अनुमान लगा सकते हैं कि उसने सार्वजनिक रूप से प्रचार किया होगा और अलग-अलग सदस्यों से उसने वार्तालाप किया होगा ताकि वह उन्हें व्यक्तिगत रूप से उत्साहित कर सके।

पौलुस और तीमुथियुस दोनों ने कलीसिया को स्थिर और उत्साहित करने की इच्छा की है। परंतु थिस्सलुनीकियों के लोग ही केवल ऐसे नहीं थे जिनको उत्साहित करने की आवश्यकता थी। सभी कलीसियाओं में ऐसे लोग हैं जिनको उत्साहित करने की आवश्यकता है। हम ऐसे लोगों के जरूरतों की कैसे पूर्ति कर सकते हैं? किसी को जाकर देखने की आवश्यकता है। एक नए विश्वासी को विश्वास में बढ़ने के लिए परामर्श की आवश्यकता है। एक नए सदस्य को कलीसिया के कार्य में संलग्न होने की आवश्यकता है। हम भी, पौलुस और तीमुथियुस की भाँति लोगों को स्थिर और उत्साहित करने में अपना सर्वोत्तम लगा सकते हैं, कि "हमारा परिश्रम व्यर्थ न जाए" (आयत 5)। EE

स्थानीय कलीसिया में प्रचार और शिक्षा देना (3:1–3)

थिस्सलुनीकियों के बारे में गम्भीर चिंता के कारण पौलुस ने तीमुथियुस को उनके पास भेजा। प्रेरितों के काम की पुस्तक में पौलुस ने बिरिया वासियों को, जो उनके साथ एथेंस तक गए थे, निर्देशित किया कि वे बिरिया लौट जाएं और तीमुथियुस और सीलास को उसके पास एथेंस भेज दें (प्रेरित 17:15)। प्रत्यक्ष रूप से, पौलुस चाहता था कि सीलास और तीमुथियुस उसके साथ कुरिंथुस तक जाए, लेकिन वह उनमें से किसी को भी अपने साथ नहीं ले जा पा रहा था। प्रेरितों के काम की पुस्तक में लूका ने यह नहीं लिखा है कि तीमुथियुस एथेंस में आकर उससे मिला और फिर पौलुस ने उसे वापस थिस्सलुनीकियों भेजा।

प्रेरित 17:15 के अनुसार, पौलुस बिरिया के भाइयों के साथ एथेंस आया और वह अकेले वहाँ रह गया। पौलुस ने तीमुथियुस और सीलास को बिरिया में ही छोड़ दिया था। पौलुस ने बिरिया के भाइयों को कहा कि वे तीमुथियुस और सीलास को उसके पास जल्दी आने के लिए कहें (प्रेरित 17:15)। प्रेरितों के काम के लेख के अनुसार एथेंस वासियों को प्रचार करने के बाद, पौलुस कुरिंथुस की ओर निकल गया (प्रेरित 18:1), जहाँ सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आकर उससे जा मिले (प्रेरित 18:5)। इस अनुच्छेद (आयत 1, 2) से यह स्पष्ट है कि तीमुथियुस एथेंस में पौलुस से जा मिला, लेकिन उसे वापस थिस्सलुनीकियों भेज दिया गया। यहाँ किसी प्रकार का विरोधाभास नहीं है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में लूका ने तीमुथियुस की एथेंस यात्रा और वहाँ से वापस थिस्सलुनीकियों की यात्रा को छोड़ दिया क्योंकि यह उसके उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसके लेख का महत्वपूर्ण अंग नहीं था। लेकिन पौलुस का थिस्सलुनीकियों को लिखने के उद्देश्य से यह एक महत्वपूर्ण अंग है।

तीमुथियुस का एथेंस आने के बाद, पौलुस और तीमुथियुस में यह सहमति बनी कि तीमुथियुस वापस थिस्सलुनीकियों जाए। उसी समय पौलुस

मकिदुनिया को चला गया। प्रेरितों के काम की पुस्तक में विस्तृत विवरण न होने कारण, मिशनरियों के कार्यों के बारे में ठीक-ठीक कहना असम्भव है। लेकिन हमें यह मालूम है कि अंततः सीलास और तीमुथियुस, मकिदुनिया की यात्रा कर पौलुस से कुरिंथुस में आकर मिले। (प्रेरित 18:5)।

जब पौलुस ने तीमुथियुस को वापस थिस्सलुनीकियों भेजा तो हमें उसके स्थानीय कलीसिया में प्रचार और शिक्षा देने के कुछ उद्देश्यों का पता चलता है।

उनके बारे में व्यक्तिगत रूप से सोचने के कारण उनकी सेवा करना। तीमुथियुस का थिस्सलुनीकियों की ओर वापस लौटना, पौलुस का उनके प्रति वास्तविक व्यक्तिगत चिंता का कारण था। पौलुस ने कहा कि "उनसे रहा न गया," एक ऐसा वाक्यांश है जो उनके प्रति उसके हृदय की गहरी भावना को प्रदर्शित करता है। उसके प्रचार और शिक्षा में उनके प्रति वह एक गहरी चिंता लिए हुए था।

एक सच्चे भाई और मसीह के सुसमाचार में परमेश्वर का सेवक होने के नाते तीमुथियुस ने पौलुस की चिंता को गले लगाया और थिस्सलुनीकियों जाने की उत्सुकता जताई। दूसरे शब्दों में, उसने समय की पुकार के अनुसार कार्य में कंधे देने की सोची, यह इसलिए उसने नहीं किया क्योंकि उसको नौकरी की आवश्यकता थी या फिर ऐसा करने में उसको आनंद आता था। वह तो प्रेम और सहानुभूति से अविभूत हो गया था।

दूसरों को विश्वास में स्थिर करना। हाल ही में थिस्सलुनीकियों की कलीसिया की स्थापना होने के कारण, थिस्सलुनीकियों के विश्वासी अपने विश्वास में अभी कच्चे थे। इन भाइयों को कोई ऐसा चाहिए था जो उन्हें स्थिर करे, सामर्थ्य प्रदान करे और उनके विश्वास में मजबूत करे। तीमुथियुस ने उन्हें मसीही जीवन में सुदृढ़ करने की सोची।

दूसरों को सांत्वना देना। यूनानी में "उत्साहित" करने के लिए παρακαλέω (*पाराकालेओ*), शब्द प्रयोग किया गया है जिसको हम "उलाहना देना" या "प्रोत्साहित करना" भी अनुवाद कर सकते हैं। उनके विश्वास के कारण उनकी कड़ी परीक्षा हो रही थी और इसलिए उन्हें ढाढ़स या आश्वासन, उत्साह और उचित दिशा निर्देशन की आवश्यकता थी।

इसलिए, तीमुथियुस अपमानित और विपत्तियों से घिरे हुए नए विश्वासियों के पास आता है, जो पहले से सताव की मार और उसकी चोट से डरे हुए थे। तीमुथियुस का उद्देश्य उनको विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ने के लिए उत्साहित करना था। प्राचीन प्रचारकों ने खूब कहा है, "आरामदायक जीवन जीने वालों को प्रताड़ित करो और सताए हुओं को सांत्वना दो।" स्पष्ट तौर पर तीमुथियुस के पास प्रताड़ित करने के लिए बहुत से आरामदायक

जीवन जीने वाले लोग नहीं थे, लेकिन सांत्वना देने के लिए बहुत से सताए हुए लोग अवश्य थे। EC

जवान कलीसिया के लिए पौलुस की चिंता (3:5)

पाँचवीं आयत में पौलुस ने लिखा, "इस कारण जब मुझ से और न रहा गया, तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिये भेजा, कि कहीं ऐसा न हो कि परीक्षा करनेवाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो, और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो।" पौलुस को इस बात की चिंता थी कि कहीं थिस्सलुनीकियों के लोग पीछे न हट जाएं। वे मसीह में अभी "बच्चे" थे जिन्हें आत्मिक दूध की आवश्यकता थी (इब्रानियों 5:12)। उनके प्रति उसके हृदय में एक माँ तथा पिता की भावना थी (2:7, 11), लेकिन ऐसा लगता है मानो वे अनाथ हो गए हों (2:17)। वे जवान, त्यागे हुए और सताव का सामना कर रहे थे और विश्वास से पीछे हटने के कगार पर थे और मसीह से दूर होने पर थे।

जिस "परीक्षा करने वाले" के बारे में पौलुस ने लिखा है वह शैतान है। पतरस ने लिखा है, "शैतान गरजने वाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए" (1 पतरस 5:8)। शैतान अपने कार्य के लिए मनुष्यों को प्रयोग करता है (देखें प्रेरित 17:5; 1 थिस्सलुनीकियों 2:14)। पौलुस को डर था कि जब इस जवान कलीसिया पर शैतान और उसके अनुयायियों द्वारा आक्रमण किया जाएगा तो वह स्थिर न रह सकेगी।

यह जानते हुए कि परीक्षा आएगी, पौलुस लगातार (बोलता रहा) उनको चेताता रहा कि उन्हें "क्लेश उठाने" पड़ेंगे (आयत 4)। कभी-कभी हमारा क्लेश शारीरिक होता है (देखें प्रेरित 16:22; 17:6)। कभी-कभी यह मानसिक होता है (देखें यूहन्ना 15:19)। चाहे यह किसी भी रूप में क्यों न हो, सताव हमेशा रहता है: "पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे" (2 तीमुथियुस 3:12)।

आज कलीसिया में अधिकांश सदस्यों को पौलुस की भांति होना चाहिए। क्या हम नए विश्वासियों के बारे में चिंतित रहते हैं? क्या हम उनके बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं और उनसे मित्रता करते हैं? क्या हम उनको शिक्षा देते हैं और उनके लिए प्रार्थना करते हैं? जिस तरह पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की चिंता की और सताव के बारे में उन्हें चेताया, उसी तरह हमें भी हमारे कलीसिया के सदस्यों की चिंता करने की आवश्यकता है और चेला बनाकर, सताव के मध्य उनको उत्साहित करने की आवश्यकता है। EE

जब सताव आता है (3:3–5)

पौलुस के थिस्सलुनीकियों से जल्द बाजी में निष्कासन के बाद, वहाँ सताव

जारी रहा। यह जवान कलीसिया दुष्ट शत्रु, बुरे लोग, संभवतः यहूदी लोग जिन्होंने मसीहियों को सताया, घिरी जा रही थी। पौलुस इस विषय पर सोचता रहा होगा कि किस प्रकार कलीसिया इस सताव के मध्य स्थिर रही होगी।

इस अनुच्छेद में, पौलुस ने सताव की रूपरेखा प्रस्तुत कर उन्हें उत्साहित किया। यद्यपि हम में से अधिकांश लोग वैसा सताव नहीं सहते जिस प्रकार उन्होंने सहा लेकिन यह शिक्षा हमें यह सिखाती है कि सताव और परीक्षा जिसका हम सामना करते हैं, में कैसे विजयी हों।

सताव योजना का हिस्सा है। अपने आप से कुछ भी नहीं होता है। या तो परमेश्वर उसको होने की अनुमति देता है या फिर उसको करता है। पौलुस कहता है कि थिस्सलुनीकियों के लिए सताव "ठहराया गया" है। यदि परमेश्वर अपने बेटे को इस संसार में निर्दोष बच्चों के मारे जाने के बिना नहीं ला सका, तो यह निश्चित है कि उसके लोग भी उसके लिए इस संसार में शैतान के हमलों के बिना नहीं रह सकेंगे।

जब पौलुस थिस्सलुनीकियों के साथ था तो उसने उन्हें आने वाले सताव से चेताया था। उसने कहा कि वे उस बात का स्मरण करेंगे जो उसने उनसे कही थी। जहाँ कहीं पौलुस प्रचार करता हुआ गया, वहाँ सुसमाचार के विरोधी भी उठे। नए विश्वासियों के लिए सताव के बारे में उसकी शिक्षा संभवतः यह उसका मानक निर्देश था।

सताव हमें विचलित नहीं करने चाहिए। मसीह के लिए महिमामय जीवन जीने के लिए हमें सताव को बाधा नहीं बनने देना चाहिए। रेमण्ड सी. केल्सी ने तीसरी आयत के बारे में इस प्रकार लिखा:

> जिस क्रिया से [परेशान करना] अनुवाद किया गया है उसका मूल अर्थ "झूठा प्रेम दिखाना" या "चापलूसी करना" या "ठट्ठा करना" है। पौलुस को इस बात का डर था कि कहीं कुछ झूठे शिक्षक आकर अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से, उनसे झूठी मित्रता जताकर, जिस प्रकार कुत्ता अपनी पूँछ हिलाकर मित्रता करने का प्रयास करता है, थिस्सलुनीकियों को विश्वास से भटका न दे।[21]

उनको आने वाले सताव के कारण दुविधा या धोखा नहीं खाना था।

परमेश्वर सताव के द्वारा भलाई भी ला सकता है। परमेश्वर के लिए जीने के हमारे निर्णय को वह परीक्षा के द्वारा मजबूत करेगा। वर्षों पूर्व किसानों ने कहा था, "आप मक्खन के तालाब में कुल्हाड़ी तेज नहीं कर सकते हैं।"

पौलुस को पता था कि सताव नई कलीसिया में आएंगे, और उत्साह भरा ये शब्द उनकी सहायता करेगा। वह सीधा कहता है: हम सताव के लिए नियुक्त

किए गए हैं, हमें इसे बाधा नहीं बनने देना चाहिए, और हमें यह देखना है कि परमेश्वर इससे कुछ भलाई ही लाएगा।

जब मसीह में हमारा विश्वास परखा जाए तो, आइए हम इन सच्चाइयों को स्मरण रखें। EC

भाइयों के लिए चिंता (3:1–8)

किसी की इस धरती के जीवन पर विजय या त्रासदी तात्कालिक रूचि और भावात्मक प्रतिक्रिया का स्रोत है। आमतौर पर, किसी व्यक्ति के लिए उसके परिवार के सदस्य उसके जीवन भर की चिंता का विषय बने रहते हैं। यह एक ऐसी चिंता है जिसे हम में से किसी को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए।

जब परमेश्वर कलीसिया का विवरण प्रस्तुत करता है, तो उसने परिवार का उदाहरण देकर अपने अनुयायियों के साथ अपने संबंध और दृष्टिकोण की तुलना की है। इस कारण, परिवार के संबंधों के आधार पर हम मसीह में अपने भाइयों एवं बहनों के बारे में कैसे सोचते हैं, अनुभव करते हैं और उनके प्रति कैसे व्यवहार करते हैं, सीखा जा सकता है।

अध्याय 3, प्रथम दो अध्यायों के विचारों को जारी रखता है जिसमें पाठकों को पौलुस, सीलास और तीमुथियुस के पुराने विद्यार्थियों के साथ उनके संबंधों को स्मरण कराता है। जिस प्रकार वे अन्यजाति थिस्सलुनीकियों के मसीह में अपने जीवन प्रारंभ करने के लिए धन्यवादी हैं वैसे ही वे उनके नए जीवन की आवश्यकताओं के बारे में भी चिंतित हैं। उनके बारे में इतनी अधिक चिंता क्यों? इन प्रचारकों ने इन नए विश्वासियों को अपने परिवार का अभिन्न अंग माना क्योंकि वे परमेश्वर के परिवार के अंग हैं।

जब हम 3:1-8 की अभिव्यक्ति के महत्व का अध्ययन करते हैं तो हम यह सीखते हैं कि हमें परमेश्वर के परिवार के सदस्यों के बारे में कितनी चिंता करनी चाहिए। हम अपने आत्मिक भाइयों एवं बहनों के प्रति चिंता कैसे व्यक्त करते हैं?

संपर्क बनाएं रखें (3:1, 2)। जब हम अपने परिवार वालों को छोड़कर जाते हैं या जब वे हमें छोड़कर जाते हैं, तो उनके प्रति हमारी चिंता बनी रहती है। एक दूसरे से अलग हो जाने के कारण, कई मायनों में वे हमारी चिंता का मुख्य विषय बन जाते हैं; इस कारण हम कई बार उनकी सहायता, जैसा हम करना चाहते हैं, वैसे करने में असहाय अनुभव करते हैं। उसी तरह चाहे हम उनके साथ हों या अलग, हमें हमारे भाइयों की दैनिक आवश्यकता के बारे में चिंता करने की आवश्यकता है।

प्रेरितों के काम 17 अध्याय में मसीही शिक्षकों पर यहूदियों द्वारा थिस्सलुनीकियों में अत्याचार के बारे में लिखा हुआ है। इन यहूदियों ने पौलुस

और उनके सहकर्मियों का बिरिया तक पीछा कर वहाँ भी उपद्रव मचाया। पौलुस के प्रति उनकी चिंता के कारण, वे उसे एथेंस ले गए, जहाँ वह अपने सहकर्मियों से अलग होकर अकेला था।

दो नगरों से खदेड़े जाने के बाद, एक अनजान शहर में, पौलुस को अपनी सुरक्षा की चिंता थी और उसने किसी भी बात का आनंद नहीं उठाया होगा केवल यह कि उसके सहकर्मी उसकी सुरक्षा और उसके आनंद की भरपूरी के लिए वापस आकर उससे मिलें। फिर भी, उसकी चिंता थिस्सलुनीकियों की अपरिपक्व कलीसिया के लिए थी जो चारों ओर से उत्साही यहूदियों की शत्रुता से घिरी हुई थी।

इस बात को समझते हुए कि तीमुथियुस, परमेश्वर का सेवक और उसका सहकर्मी है, पौलुस ने उसे थिस्सलुनीकियों में परमेश्वर के कार्य को पूरा करने के लिए भेजा – "तुम्हें स्थिर करे और तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाए" (3:1, 2)। पौलुस को पता था कि तीमुथियुस उन अपरिपक्व मसीहियों की आत्मिक उन्नति के प्रति उसकी चिंता को उनके साथ बातचीत करके प्रकट करेगा। फिलिप्पियों 2:20 में पौलुस ने तीमुथियुस को दयालु हृदय वाला व्यक्ति कहा है जो शुद्ध मन से उनकी चिंता करेगा।

पौलुस के कार्य करने का तरीका केवल विभिन्न नगरों में जाकर सुसमाचार प्रचार और कलीसिया स्थापना करना ही नहीं था बल्कि उनके साथ पत्र के द्वारा और व्यक्तिगत भ्रमण या अन्य को भेजकर उनसे जुड़ा रहना चाहता था ताकि नए मसीहियों को विश्वास में स्थिर किया जा सके। नए नियम की पत्रियां अक्सर कठिन परिस्थितियों में कलीसिया की स्थापना और उनकी देखभाल का अमूल्य उदाहरण प्रस्तुत करता है।

यह कितना अद्‌भुत है कि भाई लोग अपरिपक्व कलीसिया जो इस संसार के विरूद्ध संघर्ष कर रही है, की सहायता के लिए उनके पास जाएं! यह भी कितना अद्‌भुत है कि जब हम भाइयों से अलग हो जाते हैं तो उनके मध्य के दयालु स्वभाव के सहकर्मी उनकी आत्मिक उन्नति के लिए उनकी सहायता करते हैं! यह भी कितना अद्‌भुत है कि भाई लोग संक्षिप्त भ्रमण के लिए आते हैं और उन लोगों के लिए उनके मन में वही प्रेममय भावना बनी रहती है जब वे दूसरे स्थानों में चले जाते हैं जो वे पत्री लिखकर उनको उत्साहित करते हैं और दूसरों को व्यक्तिगत रूप से भेजकर उनके विश्वास को बढ़ाते हैं।

दूसरों को विरोध के बारे में चेतावनी दें (3:3, 4)। जब थिस्सलुनीके के लोग विश्वास में आए तो उन्हें यह चेतावनी दी गई कि वे ईश्वर विरोधियों से विरोध की अपेक्षा करें। पौलुस, सीलास और तीमुथियुस की शिक्षाओं ने इन विश्वासियों को शैतान की ओर से आने वाले विरोध का सामना करने के लिए तैयार किया जो उन्हें सच्चे परमेश्वर से दूर ले जा सकता था। इस शिक्षा ने उन्हें

सताव का सामना करने के लिए तैयार किया जो उनके मनपरिवर्तन के पश्चात् आने वाला था। यह पत्री मसीहियों को उनकी शिक्षाओं के बारे में स्मरण दिलाती है। इसमें कोई शक नहीं है कि तीमुथियुस ने भी उन्हें सताव की अपेक्षा करने के लिए स्मरण दिलाया होगा (3:3, 4)।

जब हमने लोगों को मसीह का अनुकरण करने के बारे में शिक्षा दी होगी तो संभवतः यह बताना भूल गए होंगे कि जब वे बुरी शक्तियों को छोड़ देते हैं तो वे शक्तियां उनका विरोध करेंगी। वे शैतान के दासों के आक्रमण का सामना करेंगे। यह आक्रमण निराशा, खिल्ली उड़ाने, तिरस्कार, शारीरिक शोषण, आरोप लगाना या फिर यह सुझाव कि परमेश्वर का मार्ग हानिकारक है और शैतान का मार्ग हितकारी है, के रूप में आ सकता है।

यदि दूसरों को प्रसन्न करने के लिए लोग हृदय परिवर्तन करते हैं तो वे अपनी विश्वासयोग्ता के कारण कठिन चुनौतियों का सामना करेंगे क्योंकि उन्हें जल्दी ही पता चल जाएगा कि जो लोग शैतान के दास हैं वे बहुमत में हैं। लेकिन यदि उन्होंने केवल परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हृदय परिवर्तन किया है तब जब शैतान अन्य लोगों को उनको परेशान करने के लिए प्रयोग करता है तो परमेश्वर पर भरोसा रखने के कारण उनका विश्वास और भी मजबूत होता जाता है। यह अध्याय 2 में लिखी बातों से लेखकों की बुद्धि का पता चलता है जब उन्होंने मनुष्य से अधिक परमेश्वर को प्रसन्न करने की बात कही (2:4)। मसीही शिक्षकों को इस बात पर जोर देना चाहिए कि वे सुसमाचार के पात्र और परमेश्वर के दास हैं और उन्हें अपने ही अनुयायियों की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए। जबकि इन शिक्षकों का व्यवहार दूसरों को प्रभावकारी एवं आकर्षक लग सकता है लेकिन इस प्रकार के व्यवहार का कारण परमेश्वर का अनुग्रह है और भक्तिपूर्ण व्यवहार का एक सच्चा उदाहरण यीशु है।

दूसरों के विश्वास के बारे में पता लगाएं (3:5)। हम स्वाभाविक रूप से अपने परिवारों और परमेश्वर के परिवार के सदस्यों के शारीरिक सुरक्षा के प्रति सजग रहते हैं। इससे भी बढ़कर हमें उनकी आत्मिक सुरक्षा अर्थात उनकी आत्मा के अनंत कल्याण के प्रति भी चिंता रहती है।

जब वह थिस्सलुनीकियों के नए मसीहियों से अलग किया गया तो पौलुस को अपनी शारीरिक सुरक्षा की चिंता नहीं थी लेकिन उसे तो नए मसीहियों की आत्मा की सुरक्षा की चिंता थी। वह उनके आत्मिक जीवन के बारे में सोचता रहा कि वे विश्वास में कैसे बढ़ रहे हैं इसलिए उसने तीमुथियुस को उनकी सहायता करने के लिए भेजा ताकि वह उनके आत्मिक जीवन की स्थिति की ठीक-ठीक जानकारी प्राप्त कर वापस लौटे!

क्या हम भी परमेश्वर के सम्मुख दूसरों के आत्मिक जीवन के संबंध में इसी तरह चिंतित रहते हैं? क्या हम लोगों को इस संबंध में पता लगाने के लिए

कहते हैं? क्या हम दूसरों को यह जताते हैं की उनका कल्याण हमारी चिंता का मुख्य विषय है? यदि एक संगी मसीही किसी को मेरा और मेरे परिवार या कलीसिया के विश्वास का हालचाल जानने के लिए भेजता है तो यह कितनी उत्साहित करने वाली बात होगी!

सुसमाचार सुनाएं (3:6–8)। परिवार के सदस्यों के बारे में सुसमाचार हमारे लिए अति उत्साहित करने वाला होता है। यह अखबारों में तो नहीं छपता है परंतु परमेश्वर इसके बारे में जानता है और मानवीय संबंधों के साथ मिलकर वह भी आनंदित होता है। आत्मिक विश्वास योग्यता और उन्नति एक ऐसा समाचार है जिसे हम सबसे अधिक संजोकर रखते हैं। है ना?

तीमुथियुस सुसमाचार के साथ थिस्सलुनीकियों से लौटा – बड़ा समाचार! भाइयों में विश्वास और प्रेम फैल रहा था। जिस तरह उनको अपने शिक्षकों की कमी खल रही थी ठीक उसी तरह उनके शिक्षकों को भी उनकी कमी खल रही थी! यह सुसमाचार पौलुस और उसके सहयोगियों के लिए, जो विरोध और सताव का सामना कर रहे थे, बड़ा आनंद का सुसमाचार बन गया।

प्रेरित, थिस्सलुनीकियों के दुःखों में सहभागी हुए लेकिन वे उनके आनंद में भी सहभागी हुए जिसे परमेश्वर विश्वास और प्रेम के द्वारा देता है। परमेश्वर जानता है कि मसीही लोग दुःखों का अनुभव करेंगे जिसके कारण वे शोक, कष्ट और उदासी का अनुभव कर सकते हैं। परमेश्वर यह भी जानता है कि विश्वास और प्रेम दुःखी लोगों को सांत्वना दे सकते हैं और यह उन्हें ऐसी कठिन परिस्थितियों से बाहर निकाल लेंगे। परमेश्वर पर विश्वास की कमी के कारण असुरक्षा तथा कुण्ठा पैदा होती है। प्रेम की कमी अकेलेपन और निरुत्साह की स्थिति पैदा करती है।

लोगों को परमेश्वर पर भरोसा रखने में सहायता करना एक महान कार्य है जो अनिश्चितता भरे संसार में रहने वाले लोगों को आशा देता है। लोगों को परमेश्वर और अन्य लोगों को प्रेम करने में सहायता करने के द्वारा उनके जीवन में नई ताजगी का संचार होता है और उससे उपयोगी जीवन पैदा होता है। इसे मसीही गतिविधि का भाग बनाने के द्वारा हम बहुमूल्य जीवन, स्वस्थ परिवार और मजबूत कलीसिया का निर्माण कर सकते हैं।

एथेंस में पौलुस और उसके सहकर्मियों ने दूसरों के बारे में अच्छी बातें जानकर आनंद मनाया! उसने कहा, "अब हम जीवित हैं" (3:8अ)। यह वास्तव में "जीना है": यह जानकर कि सबसे कठिन विरोध के बाद भी, जिसे शैतान उनके विरूद्ध खड़ा कर सकता था, ये नए विश्वासी विश्वासयोग्ता के साथ परमेश्वर के लिए जीवन जी रहे थे! क्या हम दूसरों की खराई का आनंद उठाते हैं और उनकी सराहना करते हैं? क्या वे यह जानते हैं कि उनकी विश्वासयोग्ता हमें पुलकित करतीं हैं? यदि यह दृष्टिकोण विकसित हो और इसे बाँटा जाए

तो हम बेहतर लोग होंगे और वे भी बेहतर लोग होंगे ।

उपसंहार। शिक्षकों ने जब थिस्सलुनीकियों छोड़ा था तो उन्होंने अलगावपन, एकांतता और संचार की कमी का अनुभव किया था जो अब समाप्त हो चुका था लेकिन उन्होंने उस शहर के उन अपरिपक्व संतों के प्रति अपनी चिंता को अपने मन में संजोये रखा। नए विश्वासियों के बारे में सुसमाचार सुनना सदैव पुलकित करने वाला था और उन्होंने कृतज्ञता के साथ उन्हें वापस पत्री लिखी।

हम अलगाव, एकांतता और संचार की कमी के कारण बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं। परमेश्वर के बच्चों की खुशहाली में रूचि के कारण हम मानवीय कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं और स्वयं और अन्य लोगों के लिए शांति और आनंद ला सकते हैं। परमेश्वर चाहता था कि उसके लोग अपनी भलाई के लिए उसकी चिंता को समझें और उसका आनंद उठाएं। अलगावपन की घड़ी में भी परमेश्वर का परिवार सबसे निकटतम परिवार होता है। हमें परमेश्वर के लोगों के बारे में सुसमाचार बांटना चाहिए। TP

एक दूसरे को उत्साहित करना (3:6–10)

तीमुथियुस ने पौलुस को किस प्रकार का समाचार सुनाया (3:6–10)? वह एक अच्छा समाचार लाया। पौलुस ने कहा कि वह उनकी विश्वासयोग्ता के कारण आनंदित हुआ। उसने कहा यदि वे प्रभु में विश्वासयोग्य रहेंगे तो वह "वास्तव में जीवित" रहेगा। पौलुस रात और दिन यह प्रार्थना कर रहा था कि वह उनके चेहरों को फिर देखे।

जब सुसमाचार थिस्सलुनीकियों को दिया गया तो उन्हें एक बहुत बड़ा इनाम दिया गया। अब थिस्सलुनीकियों की बारी थी कि वे अब पौलुस के लिए कुछ विशेष करें। वे इस महान प्रेरित के लिए क्या कर सकते थे? जो उन्होंने पौलुस के लिए किया वह सभी मसीहियों को एक दूसरे के साथ करना चाहिए। उन्होंने उसे उत्साहित किया।

किस प्रकार हम एक दूसरे को उत्साहित कर सकते हैं?

एक दूसरे को स्मरण करके। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की कलीसिया की स्थिति के बारे में तीमुथियुस के संदेश की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा की। जब तीमुथियुस लौटा तो उसने पौलुस को बताया कि वे सदैव उसको स्मरण करते हैं। वह उनके हृदयों में बसा हुआ है। यह अच्छा है कि हमारे भाई हमें स्मरण करते हैं।

एक दूसरे से मिलने के लिए लालायित होना। पौलुस को यह भी बताया गया कि थिस्सलुनीके के लोग उसको देखना चाहते हैं। उनके दिल की इच्छा उसके साथ फिर से रहने की है।

प्रभु में स्थिर बने रहें। पौलुस ने कहा कि जिस बात ने उसे सबसे अधिक सांत्वना दी वह यह है कि थिस्सलुनीके के लोग सताव का सामना करते हुए भी प्रभु में स्थिर बने हुए हैं। यह उसके लिए "जीवित रहने" जैसा है।

यहाँ एक दूसरे को उत्साहित करने का एक साधारण सूत्र है, विशेषकर जब हम एक दूसरे से दूर हों: एक दूसरे को स्मरण रखें, एक दूसरे के साथ संगति करने के लिए लालायित रहें और प्रभु में स्थिर बने रहें। EC

दूसरों के सामर्थ्य के द्वारा आनंद पाएं (3:6–13)

पौलुस को थिस्सलुनीकियों के मजबूत विश्वास के कारण बड़ा आनंद मिला (आयत 7)। यद्यपि यूनान में रहते हुए उसे दुःख पहुँचा (प्रेरित 17; 18), परंतु तीमुथियुस द्वारा लाए गए थिस्सलुनीकियों के "विश्वास," "प्रेम," और पौलुस के प्रति उनके दयालु स्वभाव के "सुसमाचार" के कारण वह उत्साहित हुआ (आयत 6)।

पौलुस का सच्चा आनंद उभर कर तब आया जब उसने देखा कि लोग आत्मिक उन्नति कर रहे हैं। यह इस बात को बताता है कि उसने वास्तव में अपना मन "स्वर्गीय वस्तुओं" पर लगाया, जहां मसीह है, और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है" (कुलुस्सियों 3:1)। उसे आनंद प्राप्त हुआ।

इसलिए, पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के लिए प्रार्थना की। उसने परमेश्वर को उनके लिए धन्यवाद दिया (आयत 9)। उसने यह भी प्रार्थना की कि वह उनका चेहरा फिर देखे ताकि जो कुछ उनके विश्वास में कमी घटी हो वह उसको पूरा कर सके (आयत 10)। उसने यह भी प्रार्थना की कि वे "आपस में और सब मनुष्यों के साथ" प्रेम में बढ़ते चले जाएं (आयत 12)। अंततः, उसने यह प्रार्थना की कि उसके आने पर परमेश्वर, "उनके मनों को स्थिर करे" ताकि मसीह के आने पर वे निर्दोष पाएं जाएं (आयत 13)।

जिस प्रकार पौलुस भाइयों की आत्मिक उन्नति के कारण आनंदित हुआ तो हमें भी उसी प्रकार जब हम दूसरों की आत्मिक उन्नति के बारे में सुनते हैं तो आनंदित होना चाहिए। क्या हम वास्तव में अपने संगी मसीहियों के प्रति चिंतित रहते हैं? क्या हम उनके लिए प्रार्थना करते हैं? हमें उनको, विशेषकर नए मसीहियों को उत्साहित करने के लिए भरसक प्रयास करना चाहिए। हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि वे विश्वासयोग्यता में बने रहें जिससे कि उनका प्रेम बढ़ता जाए और जब मसीह आए तो वे निर्दोष पाए जाएं। EE

एक दूसरे के कारण आनंदित हों (3:9, 10)

जब पौलुस अपने भाइयों के बारे में जो थिस्सलुनीकियों में हैं, सोचता है तो उसका हृदय आनंद से भर जाता है। वह उनसे सीलास और तीमुथियुस के

समान अति प्रेम करता था। वह उस पिता के समान था जो अपने बच्चों की विश्वासयोग्यता पर आनंदित होता है।

उसने थिस्सलुनीकियों के लिए कैसे धन्यवाद किया? हम बाइबल आधारित एक दूसरे के लिए सराहना के भाव की अभिव्यक्ति और पौलुस के निवेदन को देखते हैं।

परमेश्वर के सम्मुख आनंदित होना। एक मसीही के लिए अपने भाइयों के प्रति स्वाभाविक रूप से धन्यवाद देने का तरीका है – परमेश्वर को धन्यवाद देना।

पौलुस को लगा कि थिस्सलुनीकियों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने में वह असमर्थ है। वह यह पूछता है "किस रीति से परमेश्वर का धन्यवाद करें?"

यहाँ वह धन्यवाद को इस तरह से देखता है जैसे कि हम परमेश्वर को उसकी आशिषों के बदले कुछ दे रहे हों। यहाँ "देना" शब्द एक दोहरी संयुक्त क्रिया के लिए प्रयोग किया गया है जिससे यह स्पष्ट होता है जो आशीष हमने प्राप्त कीं हैं उसके बदले कुछ लौटाना है। ये पुरुष आनंदित हो रहे थे, उनके हृदय आनंद से उमड़ रहे थे और उन्हें लगा कि अपने भाइयों के लिए परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उनके शब्द पर्याप्त नहीं है।

पौलुस अपने सीमित ज्ञान के आधार उनके लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने में असमर्थता जता रहा था। वह केवल उनके लिए परमेश्वर के सम्मुख आनंद कर रहा था और दो मुख्य आशीषों के लिए प्रार्थना कर रहा था।

कि वे एक साथ रहें। मसीही लोग सदैव यही प्रार्थना करते हैं कि वे एक साथ रहें। मसीही लोग एक विशाल परिवार के समान हैं। यह बंधन संसार के किसी भी बंधन से अधिक मजबूत है जो हमें एक साथ बांध कर रखता है। जो लोग मसीह के लहू के द्वारा जुड़े गए हैं वे स्वाभाविक रूप से एक साथ रहने की इच्छा करते हैं।

पौलुस की इस प्रार्थना से दो सच्चाइयाँ सामने आती है। प्रथम, हम पौलुस के अंदर उनसे मिलने की तीव्र इच्छा शक्ति देखते हैं। वह कहता है कि वह लगातार इस बात के लिए प्रार्थना कर रहा था। इसके लिए जिस शब्द का उसने प्रयोग किया है वह ὑπερεκπερισσοῦ (*हुपेरेक्पेरिस्सू*) है जो केवल तीन बार नए नियम में प्रयोग किया गया है और इसको केवल पौलुस ने ही प्रयोग किया है। यह यहाँ दसवीं आयत में पाया जाता है जहाँ इसका अनुवाद "लौ लगाकर (रात दिन)" किया गया है; इसका प्रयोग 5:13 में भी पाया जाता है, जहाँ इसका अनुवाद "बहुत ऊँचा/बहुत ही आदर" किया गया है और इफिसियों 3:20 में भी इसका प्रयोग पाया जाता है जहाँ इसका अनुवाद "कहीं अधिक काम कर सकता है" किया गया है। इस प्रकार, हम उसकी प्रार्थना की तीव्रता में उसकी तीव्र इच्छा देख सकते हैं। वह *सचमुच* उनको देखना चाहता

था। द्वितीय, हम उसके मन में लगातार उठने वाली इच्छा देखते हैं। उसने कहा कि वह रात और दिन प्रार्थना कर रहा था। उनसे मिलने की चाह लगातार उसके मन में उठ रही थी। शारीरिक रूप से तो वह उन्हें वहीं छोड़ आया था परंतु उसके मन में वे सदैव बसे हुए थे।

कि वे एक दूसरे के विश्वास की उन्नति का कारक बनें। यद्यपि पौलुस के मन में थिस्सलुनीकियों पर प्रेरिताई का हाथ रखकर आत्मिक वरदानों से उनको सुशोभित करने की इच्छा थी तौभी उसकी इच्छा यह प्रकट करती है कि हमें एक दूसरे की आत्मिक उन्नति के लिए आपसी प्रोत्साहन प्रदान करने की आवश्यकता थी। निश्चित रूप से हम मसीह में मसीह की देह के हरेक सदस्य की व्यक्तिगत उन्नति चाहते हैं।

जब हम मसीहियों को उस तरह प्रेम करते हैं जिस तरह पौलुस ने प्रेम किया तो हम उस प्रेम को प्रार्थना के द्वारा तीन प्रकार से प्रकट कर सकते हैं: अपने भाइयों एवं बहनों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देकर, यह प्रार्थना करके कि हम उनसे मिल सकें और यह प्रार्थना करके कि हम उनके आत्मिक जीवन की उन्नति के सहभागी हो सके। क्या भाइयों के लिए यह हमारी अभिलाषा है? EC

परमेश्वर में बढ़ना (3:9–13)

एथेंस में जवान थिस्सलुनीके मसीहियों के विश्वास और प्रेम के बारे में सुनकर पौलुस हर्षोलासित हुआ। वह इन नए मसीहियों के कल्याण के बारे में, जो सताए जा रहे थे, अति चिंतित था। उसकी यह चिंता तीमुथियुस द्वारा लाए गए उत्साहित करने वाले समाचार, जो जवान मसीहियों के मध्य रहकर लौटा था, सुनकर समाप्त हो गई।

पौलुस का प्रत्युत्तर क्या था? वह धन्यवादित था और वह उस कृतज्ञता को अभिव्यक्त करना चाहता था और उसके बाद उनके भविष्य के बारे में उनका आकर्षण खींचना चाहता था। वह चाहता था कि उनका भविष्य परिपक्वता के लिए परमेश्वर द्वारा पोषित किया जाये ताकि उसका प्रभाव जीवन भर बना रहे। न केवल उसने इस उद्देश्य के बारे में गम्भीरतापूर्वक सोचा बल्कि उसके लिए उसने परमेश्वर से प्रार्थना भी की। अब वह चाहता था कि थिस्सलुनीके उसकी प्रार्थना के बारे में जाने ताकि वे उत्साहित किए जाएं।

जैसे हम इस प्रथम सदी के मसीहियत के उदाहरण के बारे में पढ़ते एवं अध्ययन करते हैं तो हम पौलुस की इस गहरी चिंता को हमारे युग के संगी मसीहियों के साथ तुलना कर सकते हैं। इस प्रकार की मसीहियत का हम कैसे अभ्यास कर सकते हैं जिससे कि दूसरों को मसीह में उन्नति करने के लिए सहायता पहुँचा सके?

कृतज्ञता के साथ प्रार्थना करें (3:9, 10अ)। थिस्सलुनीकियों के विश्वास और प्रेम में बढ़ते जाने के सुसमाचार ने पौलुस को लगभग शब्द रहित कर दिया जिसके लिए उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया। पौलुस यह जानकर भौंचक्का रह गया कि अपरिपक्व मसीही जीवित पाए जाते हैं और मसीह में बढ़ते जा रहे हैं: "और जैसा आनन्द हमें तुम्हारे कारण अपने परमेश्वर के सामने है, उसके बदले तुम्हारे विषय में हम किस रीति से परमेश्वर का धन्यवाद करें" (3:9)।

पौलुस इन नए मसीहियों के कल्याण के बारे में अति चिंतित था जो उस शहर में थे जहाँ अधिकांश लोग सच्चे परमेश्वर का अनुकरण नहीं करते थे। इसके साथ ही, जिन्होंने इस शहर के मान्यता प्राप्त धर्म को छोड़कर मसीह को अपना लिया था, उनको अक्सर उनके परिवार वालों और समाज के अन्य लोगों द्वारा प्रताड़ना का सामना करना पड़ रहा था और उनके नए धर्म का चुनाव भी उनकी मित्रता, नौकरी और नागरिकता से प्राप्त होने वाले लाभ को प्रभावित कर रहा था। इसके बावजूद उनको विश्वासयोग्य पाकर पौलुस को अति शांति मिली। परमेश्वर के प्रति उनका समर्पण, उनका विश्वास, और भाइयों से प्रेम ने इन मसीहियों को मजबूत बनाए रखा।

कभी कभी हमको शब्दों की कमी पड़ जाएगी जब हम यह समझेंगे कि परमेश्वर ने हमारे और औरों के जीवन में कितनी आशीषें दीं हैं, लेकिन फिर भी हमें प्रार्थना करना चाहिए। जैसा लिखा हैः "निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो। हर बात में धन्यवाद करो; क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा" (5:17, 18)। परमेश्वर चाहता है कि हमारे जीवन से सदैव धन्यवाद की प्रार्थना ही निकलती रहे!

भविष्य की उन्नति के लिए योजना बनाएं (3:10ब)। पौलुस थिस्सलुनीकियों के भूतकाल की विश्वासयोग्यता और वर्तमान कल्याण के लिए प्रार्थना करने के लिए अति आनंदित तो था ही, लेकिन उसको उनके भविष्य की उन्नति के बारे में भी चिंता थी। इस कारण, उसने निरंतर उस अवसर के लिए प्रार्थना की कि वह फिर से थिस्सलुनीके के भाइयों से मिले और उनके विश्वास में जो कमी रह गई है उसको पूरा करे (3:10ब)।

हमें अपनी और अन्य भाइयों की आत्मिक उन्नति की अपेक्षा करनी चाहिए। जब हम वर्तमान विशेषता और क्षमता का विश्लेषण करते हैं तो परमेश्वर के वचन को अपनी उन्नति के लिए कैसे प्रयोग करें, के बारे में निर्णय ले सकते हैं। जब यह पत्री लिखी गई तो उस समय व्यक्तिगत रूप से उनके पास जाकर उनसे मिलना असम्भव था; तो यह पत्री जब तक व्यक्तिगत रूप से वहाँ जाकर उनसे न मिला जाए, थिस्सलुनीके के मसीहियों की सहायता करने का एक माध्यम बन गई थी। इस पत्री के शेष भाग और थिस्सलुनीकियों की दूसरी

पत्री को एक साथ देखा जाए तो इससे यह विदित होता है कि इन मसीहियों को किस भली वस्तु की घटी थी।

परमेश्वर की इच्छा तुम्हारे जीवन में राज करे (3:11)। पौलुस इन भाइयों के साथ रहना चाहता था, तो उसके लिए वह चाहता था कि परमेश्वर उसके लिए मार्ग खोले: "अब हमारा परमेश्वर और पिता और हमारा प्रभु यीशु, आप ही तुम्हारे यहाँ आने में हमारी अगुआई करे" (3:11)। परमेश्वर की सेवा करने की दूसरे अवसर ने संभवतः उसे थिस्सलुनीके में जाने से रोका होगा, लेकिन वह परमेश्वर के इच्छा के अनुसार कार्य करना चाहता था।

उसी तरह, हमें भी परमेश्वर की इच्छा को ध्यान में रखकर अपनी योजना बनानी चाहिए, और इस योजना में केवल हमारी इच्छा की ही पूर्ति नहीं होनी चाहिए। याकूब 4:15 के अनुसार, हमें यह कहना चाहिए, "यदि प्रभु चाहे तो हम जीवित रहेंगे और यह या वह काम भी करेंगे।" हमें ऐसे सोचना, प्रार्थना, बात करना और कार्य करना चाहिए जैसे कि हरेक बात में हम परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति कर रहे हैं।

प्रेम, प्रेम, प्रेम (3:12)। इन मसीहियों को यह बताया गया था कि उनमें एक दूसरे के लिए प्रेम है। पौलुस ने यह प्रार्थना की कि वे आपसी प्रेम से भर जाएं और यह भी कहा कि उसकी इच्छा उनके लिए यह है कि प्रेम उनके अंदर से उमड़ता चला जाये। उसने कहा कि उनके प्रेम का सुसमाचार सुनकर उसे बड़ा आनंद प्राप्त हुआ (3:6–9)। उसने यह भी कहा कि वे एक दूसरे से प्रेम करने का बड़ा काम कर रहे हैं (4:9, 10)। फिर भी, उसने यह प्रार्थना की कि ये नए मसीही बढ़ें और प्रेम में बने रहें (3:12)। इसका यह तात्पर्य हुआ कि मसीही जीवन में प्रेम का बड़ा महत्व है! कोई भी बात प्रेम का स्थान नहीं ले सकती!

नया नियम परमेश्वर के प्रेम पर अधिक जोर देता है और यह शिक्षा देता है कि परमेश्वर के लोगों के जीवन से परमेश्वर का प्रेम झलकना चाहिए। यूहन्ना ने लिखा, "परमेश्वर प्रेम है: जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उस में बना रहता है" (1 यूहन्ना 4:16ब)। यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया कि मसीह जैसा प्रेम उसके अनुयायियों के चिह्न होंगेः "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:34, 35)।

परमेश्वर और मसीह का प्रेम और परमेश्वर के लोगों के जीवन में इस प्रेम का प्रतिबिंब ऐसे विचार हैं जिसे हमें अध्ययन करना है और उसको अपने जीवन में लागू करना है। इन विचारों को नए और प्रत्याशित मसीहियों को मसीही चरित्र के अभिन्न अंग के रूप में सिखाया जाना चाहिए।

मन का शुद्ध होना (3:13)। पूर्ववर्ती आयत के उमड़ते हुए प्रेम के साथ आयत 13 को जोड़ा गया है। यदि हमारे मनों में प्रेम है तो हम पर कभी भी गलत विचारों को पालने का आरोप नहीं लगाया जा सकता है क्योंकि तब हम अपने जीवन से परमेश्वर के इरादों को प्रदर्शित करेंगे। इन मसीहियों को पहले स्मरण दिलाया गया है कि परमेश्वर हमारे "मनों को जाँचता है" (2:4)। हम अक्सर गलती करते हैं जिसके लिए हमें क्षमा भी किया जाता है, लेकिन परमेश्वर चाहता है कि हमारा मन प्रेम से भरा रहे। परमेश्वर चाहता है कि वह "तुम्हारे मनों को ऐसा स्थिर करे कि जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ आए, तो वे हमारे परमेश्वर और पिता के सामने पवित्रता में निर्दोष ठहरें।"

थिस्सलुनीके के लोग यीशु के पुनरागमन के लिए कैसे तैयार हो रहे थे? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है! यीशु के पुनरागमन के लिए तैयार होने का तात्पर्य मसीही बनने का हिस्सा है (1:10)। यह मसीहियों के अपेक्षित आनंदपूर्ण पुनर्मिलन का भाग है (2:19, 20)।

हम यह समझते हैं कि हम अपनी धार्मिकता के कारण पवित्र नहीं किए गए हैं, "क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)। हम यह भी जानते हैं कि परमेश्वर बुराई के साथ नहीं रह सकता है: "क्योंकि तू ऐसा ईश्वर नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न हो; बुराई तेरे साथ नहीं रह सकती" (भजन 5:4)।

उसके पवित्रता में भागी होने के लिए हमें परमेश्वर के द्वारा दिए गए यीशु के बलिदान पर निर्भर होने की आवश्यकता है: "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं" (2 कुरिंथियों 5:21)। हमारा मन केवल यीशु के द्वारा ही मसीह के पुनरागमन पर परमेश्वर की धार्मिकता का सहभागी हो सकता है। इन थिस्सलुनीकियों के समान, हमारे मनों को स्थिर करने के लिए हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए।

उपसंहार। कोई भी इस लेख से अधिक मार्मिक लेख की कल्पना नहीं कर सकता है, जब मसीही मित्रों ने पूर्वकाल की आशीषों के लिए धन्यवाद किया, उनके पुनः मिलन की इच्छा की और उनके आशीषमय भविष्य की कल्पना की जो उनसे बिछड़ गए थे! यदि हम इन विचारों को समझ सकें और इन्हें भाइयों पर लागू करें तो उनके और हमारे लिए यह बड़ा लाभ लेकर आएगा।

जब हम 3:9–13 पुनः पढ़ते हैं, तो आइए हम इसे अपनी दैनिक प्रार्थना में लागू करें और तब हम भाइयों को यह बताएं कि हम उनके लिए कैसे प्रार्थना करते हैं। यह अवश्य परिवर्तन लाएगा! यह मनों को दृढ़ करेगा, दृष्टिकोण बदलेगा, अच्छे कार्य उत्पन्न करेगा और यह भाइयों की उन्नति में सहायता

करेगा तथा वे अधिक विश्वासयोग्य रहेंगे। TP

एक दूसरे को प्रोत्साहित करना (3:11–13)

पौलुस ने पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु से प्रार्थना की कि वह थिस्सलुनीके लौट सके ताकि वह इस अपरिपक्व कलीसिया के साथ समय बिता सके। इसके पश्चात्, उसने उनके लिए गम्भीर इच्छा प्रकट की। उसके गम्भीर इच्छा में हम यह देखते हैं कि एक दूसरे के लिए हमारी सबसे बड़ी शुभकामनाएं कैसी होनी चाहिए।

कि वे उन्नति करें और प्रेम में बने रहें। पौलुस यह चाहता था कि वे न केवल उसके लिए बल्कि सभी लोगों के लिए प्रेम में उन्नति करें। एक मसीही को सभी लोगों के लिए प्रेम से चरितार्थ होना चाहिए और इस क्षेत्र में उसकी उन्नति, अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उन्नति का आधार है।

कि वे पवित्रता में स्थिर किए जाएं। प्रेम में उन्नति करने के द्वारा, यीशु के पुनरागमन पर परमेश्वर के सम्मुख हमारा मन स्थिर किया जाएगा। वह चाहता है कि हमारे मन प्रभु की सेवा के लिए अलग किए जाएं।

कि वे प्रभु के पुनरागमन पर उसके सम्मुख निर्दोष पाएं जाएं। हम यीशु के पुनरागमन के लिए कैसे तैयार हो रहे हैं? पौलुस ने इसे इस प्रकार देखा कि हम सभी लोगों से इस प्रकार प्रेम करें कि हम परमेश्वर के सम्मुख अपने पवित्रता की समर्पण के प्रति स्थिर किए जाते हैं। हम दोष मुक्त नहीं हो सकते हैं परंतु हम निर्दोष हो सकते हैं। यदि किसी का मन निष्कपट उद्देश्य से भरा हो तो वह निर्दोष है।

आहा! पौलुस ने किस प्रकार की कामना की! यह अर्थपूर्ण और संतुलित कामना थी। यह इस प्रकार का आह्वान था जिसमें दूसरों से उचित प्रकार का प्रेम और पवित्रता से परमेश्वर की आराधना करने की मांग पाई जाती है। EC

"तुम्हारा विश्वास" (3:1–10)

रोमियों 10:17 कहता है, "सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है ।" जैसे पौलुस ने 1 कुरिंथियों 15:3, 4 में लिखा है "… कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मारा गया। और गाड़ा गया और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा," इसे थिस्सलुनीके के लोगों ने सुना था। इन थिस्सलुनीकियों को वचन के द्वारा मसीह में विश्वास में लाया गया था। यह अनुच्छेद, 3:1-10, उनके विश्वास की विशिष्टता का उल्लेख करता है।

व्यक्तिगत विश्वास (3:1, 2)। सर्वप्रथम, उनका व्यक्तिगत विश्वास था। पौलुस ने "तुम्हारे विश्वास" वाक्यांश को इस अनुच्छेद में पाँच बार प्रयोग किया

है (आयतें 2, 5, 6, 7, 10)। हमारे विश्वास को उचित रूप से स्थिर करने के लिए, यह किसी व्यक्ति विशेष पर केन्द्रित होना चाहिए। अब विश्वास एक जानी मानी सच्चाई का अंग है जो मसीह की अंतिम इच्छा और वाचा पर निहित है। ये सारी बातें सत्य और महत्वपूर्ण है, लेकिन इसके केन्द्र में एक व्यक्ति, यीशु मसीह है। पौलुस ने 2 तीमुथियुस 1:12 में लिखा, "क्योंकि मैं उसे जिस की मैंने प्रतीति की है, जानता हूँ और मुझे निश्चय है, कि वह मेरी थाती की उस दिन तक रखवाली कर सकता है।"

इन थिस्सलुनीकियों की पत्रियों में हम अपरिपक्व मसीहियों को भेजे गए पत्रों की ताजगी तथा इसकी सामर्थ्य का अनुभव करते हैं। यह उस प्रचार का हमें स्मरण दिलाता है जो मन में कार्य प्रारंभ करता है, परमेश्वर के राज्य की स्थापना करता है और विश्वास जगाता है।

क्या बपतिस्मा का उद्देश्य और क्रियाविधि महत्वपूर्ण है? हाँ यह है। वचन यह स्पष्ट करता है कि हमने उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लिया है (रोमियों 6:3)। जिस तरीके से हम आराधना करते हैं क्या वह महत्वपूर्ण है? हाँ है। परमेश्वर सच्चे आराधकों को ढूँढता है जो आत्मा और सच्चाई में आराधना करे (यूहन्ना 4:24)। फिर भी, ये सारी बातें यीशु पर केन्द्रित होनी चाहिए। यीशु की प्रभुता के कारण वचन की शिक्षा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उसकी अंतिम वाचा है।

मुझे अपने विश्वास की उन्नति के लिए क्या करना चाहिए? रोमियों 10:17 कहता है, "सो विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।" हमारा विश्वास केवल ऐसे ही उत्पन्न नहीं होता है बल्कि इस प्रकार स्थिर किया जाता है। यदि आप अपने विश्वास को कमजोर बनाना चाहते हैं तो आप जीवित वचन से अपना संपर्क तोड़ दें। लेकिन यदि आप चाहते हैं कि विश्वास बढ़े और दृढ़ हो तो प्रतिदिन समय निकालकर विश्वास के स्रोत के पास जाएं। ध्यानपूर्वक और प्रार्थनापूर्वक यूहन्ना रचित सुसमाचार पढ़ने की मैं सलाह देता हूँ। यूहन्ना स्पष्ट रूप से अपने सुसमाचार लिखने का उद्देश्य बताता हैः "यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ" (यूहन्ना 20:30, 31)। हरेक आश्चर्यकर्म जो उसने दिखाया वह हमारे पास नहीं है। यूहन्ना ने केवल चुने हुए आश्चर्यकर्म ही लिखे। पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यूहन्ना ने विश्वास की उन्नति करने वाले चुने हुए चिह्न लिखे। उसका उद्देश्य यह था कि विश्वास करने में यह सुसमाचार हमारी अगुआई करे।

परखा हुआ विश्वास (3:3–10)। दूसरी बात पौलुस ने कही कि हमारा विश्वास परखा जाना चाहिए। इस अनुच्छेद की रोशनी में विश्वास एक ऐसी बात है जिसे परखा जाना चाहिए, जिसकी परीक्षा की जानी चाहिए और

उसको आजमाया जाना चाहिए। ASV में याकूब 1 का अनुवाद ऐसा किया गया है "तुम्हारे विश्वास का परखा जाना/the proving of your faith," जबकि KJV इसे "तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है/the trying of your faith worketh patience" अनुवाद किया गया है।

पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों 3 में इस प्रकार कहा,

> कि कोई इन क्लेशों के कारण डगमगा न जाए। क्योंकि तुम आप जानते हो कि हम इन ही के लिये ठहराए गए हैं। क्योंकि पहले ही, जब हम तुम्हारे यहाँ थे तो तुम से कहा करते थे कि हमें क्लेश उठाने पड़ेंगे, और ऐसा ही हुआ है, जैसा कि तुम जानते भी हो (आयतें 3, 4)।

अगली आयत में शैतान उनकी परीक्षा करता है के बारे में लिखा है। इसलिए, विश्वास की परख सताव और दुःख उठाने के द्वारा हो सकती है और शैतान के द्वारा हो सकती है। यह परीक्षा, हालांकि संकट की घड़ी है और यदि इस परीक्षा पर विजय प्राप्त कर ली जाए तो वह और भी बड़े विश्वास की घड़ी हो सकती है।

आयत 3 बताती है कि हम क्लेश के लिए ठहराए गए हैं। जब क्लेश आता है, हमारी बसी बसाई दुनिया लुढ़कने लगती है, हम अपने आपको दुःख की कुठाली और भट्ठी में पाते हैं तो ऐसी स्थिति में हिम्मत हारकर विश्वास से मुँह न मोड़ें। ऐसी घड़ी में ही संभवतः हमें सबसे बढ़कर विश्वास की आवश्यकता होती है।

इसलिए, विश्वास को प्रमाणित किया जाना चाहिए या फिर उसकी परख की जानी चाहिए। हम गाते हैं, "ओह! विश्वास नहीं सिकुड़ता है।" इसलिए आइए, हम दिन की रोशनी में अपने विश्वास के चारों ओर बाड़ा बांधे या उसे दृढ़ करें, क्योंकि परीक्षा की घड़ी आएगी। जब परीक्षा आए तो तब हम यह न कहें, "इसका यह तात्पर्य हुआ कि वह अब हमें प्रेम नहीं करता है।"

घोषित विश्वास (3:6)। विश्वास की घोषणा की जानी चाहिए। व्यक्तिगत् रूप से परखा गया विश्वास एक दूसरे के साथ बांटा जाना चाहिए। सच तो यह है कि 1 थिस्सलुनीकियों 3 की ये दस आयतें इस सच्चाई के बारे में बहुत थोड़ा कहती हैं लेकिन इससे पहले पौलुस ने कहा, "पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है, कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं" (1:8)। पौलुस ने एक ऐसी अभिव्यक्ति का प्रयोग किया है जो तुरही फूँके जाने के समान हो या घाटियों में गूँजने वाली बिजली की कड़क। यह शब्द "चर्चा फैल गई" थी। इस वाक्यांश तथा नए नियम के दूसरे अनुच्छेदों से हमें इस बात का आश्वासन दिया गया है कि सच्चे विश्वास की घोषणा की जानी चाहिए।

स्वप्नों की अपनी जगह है लेकिन स्वप्नों के साथ परिश्रम भी जरूरी है। दर्शन की अपनी जगह है लेकिन दर्शन के साथ पराक्रम भी जरूरी है। स्वप्न के साथ कार्य भी होना चाहिए। विश्वास वास्तविक है और जीवित विश्वास की चर्चा होनी चाहिए। 2 कुरिंथियों 4:13 में पौलुस ने लिखा, "... जिसके विषय में लिखा है, "मैं ने विश्वास किया, इसलिये मैं बोला।" अत: हम भी विश्वास करते हैं, इसी लिये बोलते हैं।"

इब्रानियों 12:1 में वर्णित उलझाने वाले पाप संभवतः अविश्वास है। यह विश्वास के अध्याय के तुरंत बाद लिखा गया है। हम सुनते हैं, "तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर कर के, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें।" तो आओ हम शक और अनिश्चितता को अलग रख दें। आओ हम गुप्त में रहने के स्वभाव त्यागें जो हमें व्यक्तिगत् सुसमाचार प्रचार से रोकता है, लोग अपने शक पर विश्वास करते हैं और अपने विश्वास पर शक करते हैं। आओ हम उन बातों को अलग करें जो हमें हमारे मार्ग से आसानी से भटका देता है। आओ हम धीरज से उस दौड़ में दौड़ें जो हमारे सामने है और आओ हम पौलुस के साथ कहें "मैंने विश्वास किया, इसलिये मैं बोला।"

उपसंहार। हमारा व्यक्तिगत विश्वास होना चाहिए। यह परखा जाएगा। इसकी घोषणा की जानी चाहिए। आपके विश्वास के बारे में क्या है? क्या यह मजबूत, सच्चा, स्वस्थ और परमेश्वर की वचन के सत्यता पर जड़ पकड़ा है जो हम सब पर आने वाले उस तूफान से संघर्ष करने के लिए तैयार है? क्या यह ऐसा विश्वास है जिसको व्यक्तिगत रूप से अधिक जड़ पकड़ने की आवश्यकता है? क्या यह ऐसा विश्वास है जिसने अपने आपको समर्पण के द्वारा अभिव्यक्त किया हो? AM

समाप्ति नोट्स

[1]आर. सी. एच. लेन्स्की, *दि इन्टरप्रेटेशन आफ सेंट पॉल्स इपिस्ट्लस द कोलोसियंस, टू द थेस्लोनियंस, टू तीमोथी, टू टाइटस एण्ड टू फिलेमोन* (कोलंबस, ओहीओः लूथरन बुक कंसर्न, 1937; रेप्रिंट, मिनियापोलिसः आग्सबर्ग पब्लिशिंग हाऊस, 1961), 281. [2]वाल्टर बाऊर, *ए ग्रीक-इंगलिश लेक्शीकन आफ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली ख्रिश्चयन लिटेरेचर*, तीसरा संशोधन, एण्ड सम्पादक फ्रेडरिक विलियम डैंकर (शिकागोः यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस, 2000), 520-21. [3]ब्रूस एम. मेट्सगर, *ए टेक्ट्सचुअल कमेंट्री आन द ग्रीक न्यू टेस्टामेंटः ए कंपानियम वोल्यूम टू द यूनाइटेड बाइबल सोसाईटीज ग्रीक न्यू टेस्टामेंट थर्ड एडीसन* (न्यू यॉर्कः यूनाइटेड बाइबल सोसाईटीज, 1971), 631. [4]डेविड जे. विलियम, *1 एण्ड 2 थेस्लोनियंस*, न्यू इंटरनेशनल बाइबल कमेंट्रीः न्यू टेस्टामेंट सीरीज, वोल. 12 (पीबॉडी, मासाचुसेट्सः हेंड्रीकसन पब्लिशर्स, 1992), 58. [5]बाऊर, 402. [6]लियोन मौरिस, *द फर्स्ट एण्ड सेकेंड एपिस्ट्ल टू द थेस्लोनियंस*, द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री आन द न्यू टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मीशीगनः विलियम

बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1959), 101, प्रकाशक। [7] *द न्यू इन्टनेशनल डिक्सनरी आफ न्यू टेस्टामेंट थियोलोजी,* कोलीन ब्राऊन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1975), 1:570 में जॉर्ज ब्रौमैन, "एक्सोर्ट।" [8]मौरस, 106-7. [9]विलियम, 63. [10]इबिद., 64.

[11]ए. टी. रॉबर्टसन, *दि एपिस्टल्स आफ पॉल,* वोल्यूम 4, *वर्ड पिक्चर्स में द न्यू टेस्टामेंट* (नैशविलः ब्राडमैन प्रेस, 1931), 26-27. [12]इबिद., 27. [13]विलियम्स, 66. [14]मौरिस, 96-97. [15]इबिद., 115. [16]जे. डब्ल्यु. मेक्गावरी एण्ड फिलिप वाई. पेंडलटन, *थेस्लोनियंस, कोरिंथियंस, गलेशियंस एण्ड रोमंस,* द स्टैंडर्ड बाइबल कमेंट्री (सिनसिनाटी, ओहियोः स्टैंडर्ड पब्लिशिंग फॉडेशन, 1961), 14. [17]आई. हावर्ड मार्शल, *1 और 2 थेस्लोनियंस,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1983), 102. [18]हॉल लिंडसे, *द लेट ग्रेत प्लानेट अर्थ* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन, 1970), 125-31, 159-65. [19]विलियम्स, 68. रैप्चर की विभिन्न स्थितियों (पूर्व- महा क्लेश, मध्य- महा क्लेश, महा क्लेश उपरांत) के विस्तृत विवरण के लिए देखें आर. रैटर, पी. फ़ैनबर्ग, जी. आर्चर एंव डी. मू, द रैप्चर (ग्रैंड रैपिड्स: एकेडेमिक, 1984)। [20]यूनाइटेड बाइबल सोसाइटीज में अब आयत 13 के अंत में कोष्ठक में C श्रेणी के साथ "आमीन" प्रकाशित किया है। सिनाइटिकस, एलेक्ससांद्रिनस और बेजा ने भी अपने प्रकाशन में इसे सम्मिलित किया गया है। हूगो मेक्कोर्ड (*मेक्कोर्ड न्यू ट्रांसलेशन आफ थे एवरलास्टिंग गॉस्पल*) ने भी इसे स्वीकार किया है। देखें *द ग्रीक न्यू टेस्टामेंट,* 4th संशोधन, प्रकाशक बारबरा एलेंड, कुर्ट एलेंड, जोहान्नेस कारावीडोपुलोस, कार्लो एम. मार्टिनी और ब्रूस एम. मेट्सगर (स्टटगार्टः यूनाइटेड बाइबल सोसाइटी, 1998)।

[21]रेमण्ड सी. केल्सी, *द लेटर्स ऑफ़ पौल टू द थिस्सलोनियन्स*, द लिविंग वर्ड कमेंट्री, वोल. 13 (आस्टीन, टेक्सास: आर. बी. स्वीट कम्पनी, 1968), 66.